Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

अंधो अंधं पहं णेंतो,
दूरमद्धाण गच्छई।

अंधा व्यक्ति अंधे का मार्गदर्शन करता है तो वह भटका देता है, मूल रास्ते से दूर ले जाता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 22 • अंक 48 • 6 - 12 सितंबर, 2021 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 04-09-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

ज्ञानशाला दिवस का आयोजन

बाल पीढ़ी को संस्कारवान बनाने का महत्त्वपूर्ण उपक्रम है ज्ञानशाला : आचार्यश्री महाश्रमण

अपने अध्यात्म के आलोक से जन-जन के जीवन को प्रकाशित करने वाले महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में ज्ञानशाला दिवस मनाया गया। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महासभा के निर्देशन में देशभर में स्थानीय तेरापंथ सभा-संस्थाओं द्वारा संचालित बाल पीढ़ी को संस्कारित करने का एक महत्त्वपूर्ण, सतत प्रवाही उपक्रम है–ज्ञानशाला। इसका शुभारंभ अणुव्रत प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी द्वारा सन् १९९१ में हुआ। वर्तमान में पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की प्रेरणा से बालपीढ़ी को संस्कारवान बनाने का उपक्रम ज्ञानशाला निरंतर गतिशील है। कोरोना काल से पूर्व २०१९ के आँकड़ों अनुसार १९००० ज्ञानार्थी, ५२१ ज्ञानशालाएँ देशभर में संचालित हैं, जिनमें ३६०० प्रशिक्षक अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। वर्तमान में ऑफलाइन एवं ऑनलाइन माध्यम से स्थानीय स्तरों पर ज्ञानशाला का संचालन किया जा रहा है।

ज्ञानशाला दिवस पर संबोधन देते हुए आचार्यश्री ने कहा–ज्ञानशाला एक नींव को मजबूत करने वाली गतिविधि है। बच्चे देश का भविष्य होते हैं। बच्चे मानो घट के समान होते हैं, ज्ञान और संस्कार की बूँदों से उन्हें संपोषित किया जाता है तो वे आगे जाकर स्वस्थ समाज की संरचना कर सकते हैं। प्रशिक्षण एवं व्यवस्था दोनों का संयोग अच्छा हो तो प्रशिक्षण प्रणाली ठीक हो सकती है। प्रशिक्षक पहले अपने आपको प्रशिक्षित करेंगे तो वो बच्चों को सही ज्ञान दे सकते हैं। ज्ञानशाला नई पौध को सिंचन करने का प्रयास है। बाहरी स्कूली शिक्षा के साथ संस्कार व धार्मिक ज्ञान भी दिया जाए तो समाज के लिए अच्छा उपक्रम साबित हो सकता है। जगह-जगह पर ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा दी जाने वाली प्रस्तुतियों को देखकर लगता है कि इन पर कितना प्रयास और अभ्यास किया जा रहा है। ज्ञानशाला का उपक्रम बहुत उपयोगी साबित हो रहा है इसके प्रति समाज में भी जागरूकता है संस्थाएँ ध्यान देकर यह प्रयास करें कि ज्ञानशाला और ज्ञानार्थियों की संख्या में किस प्रकार वृद्धि की जा सकती है।

भीलवाड़ा, २९ अगस्त, २०२१

तीर्थंकर के प्रतिनिधि, आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि ठाणं आगम में दस प्रकार का श्रमण धर्म बताया गया है। पाँचवाँ धर्म है–लाघव-हल्कापन। हमारा जीवन बाह्य सामग्री का लाघव, साधुओं की दृष्टि से उपकरणों की अल्पता। यह सामान्यतया श्रेयस्कर है। अनावश्यक उपकरण न रहे। उपकरण परिग्रह का रूप न लें, यह धातव्य है।

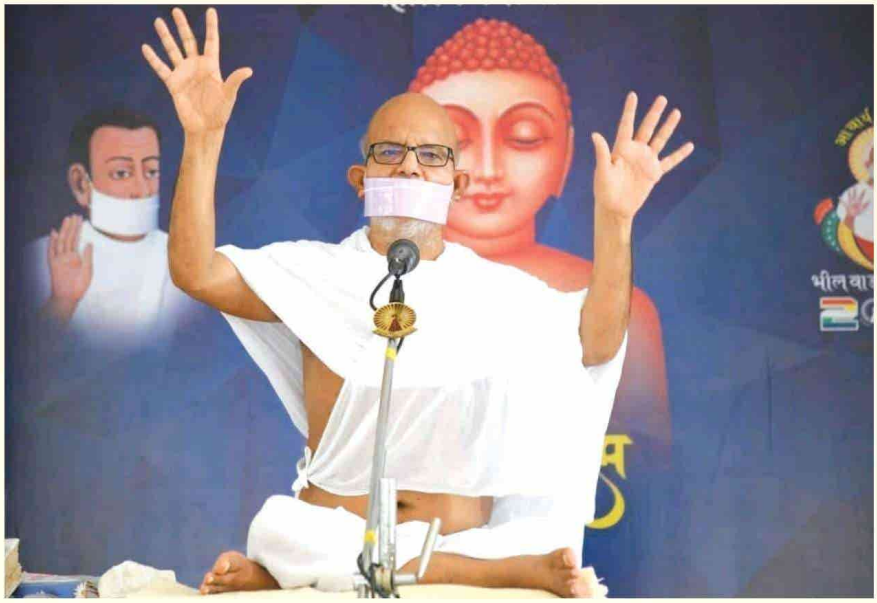

तीन गौरव बताए गए हैं–रिद्ध गौरव, रस गौरव, सात गौरव। इन तीन गौरवों का भी ध्यान रखें। साधु संयम रखे। जो उपकरण है, उनके प्रति लेखन भी नियमित होता रहे। छठा धर्म है–सत्य। ऋजुता सच्चाई से जुड़ा हुआ तत्त्व है। सच्चाई के लिए मितभाषिता भी अपेक्षित है। छलकपट मन में न हो। आर्जव और सत्य भाई-भाई हैं। पारस्परिक दोनों का संबंध है। सत्य की आत्मा है–मृषावाद से विरमण। हर सत्य बोलना जरूरी नहीं है। मृषावाद नहीं करना यह मूल है सत्य का। हर सच्चाई को हर जगह प्रगट करना अपेक्षित नहीं है।

सारी आँखों से देखी हुई और सारी कानों से सुनी हुई बातें बाजार में बेचने की नहीं होतीं। जहाँ अपेक्षित हो कथन-प्रगटीकरण किया जा सकता है। झूठ नहीं बोलना यह सत्य के लिए आवश्यक है। गार्हस्थ्य में भी झूठ बोलना जरूरी नहीं है। सातवाँ धर्म है–संयम। हिंसा आदि से निवृत्ति, पापों से निवृत्ति, रहन-सहन सबमें संयम। अणुव्रत की आत्मा संयम है। अहिंसा-नैतिकता के आधार में भी संयम को देखा जा सकता है।

आठवाँ धर्म–तप, तपस्या करना। मुंबई में मुनि अजित कुमार जी महासर्वतोभद्र तपस्या कर रहे हैं, ऐसी जानकारी मिली है। मुनि नमि कुमार जी ने इंदौर में ६० दिन से अधिक की तपस्या की। गृहस्थ भी तपस्या करते हैं। मुनि पारस जी के भी तपस्या चल रही है। तपस्या के बारह भेद स्वाध्याय-ध्यान आदि हैं।

नौवाँ धर्म है–त्याग। अपने साम्योगिक साधुओं को भोजन आदि का दान देना। यह साधु के लिए त्याग धर्म है।

दसवाँ धर्म है–ब्रह्मचर्यवास, काम-भोग विरति। खाद्य-संयम, दृष्टि संयम रखना। अरागता का भाव रहे।

ये दस श्रमण धर्म बताए गए हैं। गृहस्थ जितना हो सके करें, पर साधु तो विशेषतया इन धर्मों का पालन करें। दिगंबर परंपरा में तो दस लक्षण पर्व होता है। चीज तो एक ही है, मात्रा भेद हो सकता है। साधु-गृहस्थ दोनों के काम के हैं। ये दस धर्म साधु संस्था व श्रावक-श्राविकाओं के लिए कल्याणकारी हैं। जितना पालन करेगा उतना लाभ मिल सकेगा।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि जब व्यक्ति की गृद्धा-मूर्च्छा खत्म हो जाती है, तब व्यक्ति लाघव का विकास करता है। श्रमण निर्ग्रन्थ के लिए लघुता प्रशस्त हो। लाघव गुण का विकास हो।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि क्रोध-मान, माया और लोभ ये चार कषिण-कषाय हैं। मानसिक संकलेश पैदा करने वाले कषाय हैं। जिससे आदमी भटक जाता है। आत्मा कर्म-रजों से लिप्त हो जाती है, इस कारण व्यक्ति अपना संतुलन सहज रूप से खो देता है। धर्म की साधना करनी है, तो इन पर नियंत्रण करना होगा।

(शेष पृष्ठ २ पर)

खमतखामणा

संवत्सरी के पावन अवसर पर गत वर्ष में हुई ज्ञात-अज्ञात भूलों हेतु खमतखामणा।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

✦ अणुव्रत की साधना करने वाला व्यक्ति अहिंसा और संयम को आंशिक रूप से साध सकता है। उसकी वह साधना पर्यावरण की दृष्टि से भी उपयोगी बन जाती है।

—आचार्यश्री महाश्रमण

अहिंसा की साधना के लिए संयम की साधना जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २२ अगस्त, २०२१

श्रावण की पूर्णिमा-रक्षाबंधन। भाई-बहन के रिश्ते का पावन त्योहार। हम ज्ञान-दर्शन, चारित्र और तप की राखी बाँधकर स्वयं की आत्मा की रक्षा करें। पंचाचार के अखंड आराधक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि ठाणं आगम में कहा गया है–शास्त्रकार ने दस प्रकार के संयम बताए हैं।

दस प्रकारों में नौ प्रकार तो जीवों से संबंधित हैं। एक अंतिम प्रकार अजीव से संबंधित है। अध्यात्म की साधना में संयम का बड़ा महत्त्व है। अहिंसा की साधना के लिए भी संयम की साधना अपेक्षित होती है। अहिंसा परम धर्म है, पर तब तक अहिंसा सधती नहीं है, जब तक व्यक्ति में संयम की साधना नहीं आ जाती है। संयम के अभाव में आदमी हिंसा में प्रवृत्त हो जाता है।

प्राणियों के प्रति संयम प्राणियों की अहिंसा के प्रति प्रवृत्त करता है। दस प्रकारों में पहला प्रकार है–पृथ्वी कायिक संयम। जैन दर्शन में जीवों के बारे में कुछ सुंदर और विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है। जीवों के अनेक प्रकार बताए गए हैं। जिनका जीवत्व प्रकट नहीं दिखाई देता है, पर शास्त्र के आधार पर जिन्हें जीव बताया गया है, उनके प्रति संयम रखना विशेष बात है। अनावश्यक हिंसा न हो।

संयम एक ऐसा तत्त्व है, जो प्रासंगिक रूप में पर्यावरण सुरक्षा संबंधी बात हो जाए। साधु तो छः काय के जीवों के त्राता कहे गए हैं। सचित मिट्टी का तो संस्पर्श ही न हो। गृहस्थ भी खनन आदि में संयम रखे तो पृथ्वी कायिक संयम हो सकता है।

दूसरा है–अप्कायिक संयम। जल के प्रति संयम। जल हमारे जीवन से कितना गहराई से जुड़ा हुआ है। जल है, तो मानो अमृत है। जल है, तो जीवन है। सजीव जल का उपयोग करने से जल की हिंसा का प्रसंग जुड़ता है। एक बूँद जल में असंख्य जीव होते हैं। अचित पानी के प्रति संयम का भाव हो। अनावश्यक उपयोग न करें। गृहस्थ भी ध्यान दें, पानी का अनावश्यक व्यय न हो।

तीसरा–तेजस्कायिक संयम। अग्नि का भी गृहस्थों में अनावश्यक उपयोग न हो। चौथा–वायुकायिक संयम। हवा के प्रति भी संयम। अनावश्यक उपयोग न हो। पाँचवाँ–वनस्पतिकायिक संयम। वनस्पति का हमारे जीवन में बहुत उपयोग है। आयारो आगम में तो वनस्पति और मनुष्य की समानता का सुंदर चित्रण किया गया है। अनावश्यक वनस्पतिकाय की हिंसा न हो।

द्विन्द्रिय, त्रिन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय, पंचेंद्रिय, जीव हैं, इनके प्रति भी संयम हो, अनावश्यक हिंसा इन जीवों की न हो। शास्त्रकार ने अजीवकाय संयम भी बता दिया है। निर्जीव चीजें हैं, उनके प्रति भी संयम हो। अजीव का अच्छा ध्यान रखो तो अच्छा उपयोग हो सकता है। बोलचाल भाषा में कहा गया है कि कपड़ा कहता है, तुम मेरी आब रखोगे, मैं तुम्हारी आब रखूँगा। हम संयम की साधना में आगे बढ़ें, यह काम्य है।

आज श्रावणी पूर्णिमा है। एक पर्व का दिन रक्षा बंधन के रूप में भी यह प्रतिष्ठित है। संसार में भाई-बहन का भी संबंध होता है। बहन भाई की कलाई पर राखी बाँधती है। राखी के निमित्त से मिलने का अवसर मिल जाता है। रक्षा भी एक बड़ा कार्य होता है। राजतंत्र और लोकतंत्र दो प्रणाली हैं, पर दोनों में रक्षा का दायित्व होता है। अपना-अपना दायित्व होता है।

अध्यात्म की दृष्टि से देखें, तो आत्मा की रक्षा पापों से करें। संवर का बंधन लगा दें। आत्मा की रक्षा हो सकती है। पूज्यप्रवर ने संस्कृत भाषा में आगमों के बारे में फरमाया। तेरापंथ धर्मसंघ में भी संस्कृत भाषा का महत्त्व है। भगवद् गीता के प्रसंग को समझाया। जैसे भागवत् गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन को संबोध प्रदान करते हैं, वैसे आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा रचित संबोधि ग्रंथ में भगवान महावीर मुनि मेध को संबोध प्रदान करते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ जी तो संस्कृत भाषा के आशु कवि थे।

साध्वीप्रमुखाश्री जी भी संस्कृत के अच्छे जानकार हैं। हमारे धर्मसंघ में कई चारित्रात्माएँ संस्कृत भाषा के जानकार हैं। मुनि नथमल जी को संस्कृत का उच्च स्तर का ज्ञान था। मुनि बुद्धमल जी स्वामी भी संस्कृत के अच्छे वेत्ता थे। पूज्य मघवागणी, कालूगणी के समय में भी संस्कृत का अच्छा विकास हुआ था।

हमारे धर्मसंघ में संस्कृत के अनेक ग्रंथ प्रकाशित हैं। मुमुक्षु बहनें भी संस्कृत का अध्ययन करती हैं। हमारी समणियाँ भी संस्कृत भाषा की जानकार हैं। आज प्रातः मुनि ध्रुवकुमार जी ने संस्कृत दिवस पर संस्कृत में बोला था। मुनि सुखलाल जी स्वामी व मुनि राकेश कुमार जी स्वामी भी संस्कृत के अच्छे वेत्ता थे। कालुकौमुदि संस्कृत का अच्छा ग्रंथ है। जिनको रुचि हो संस्कृत भाषा का विकास करें। साध्वीवर्या जी भी संस्कृत भाषा सीखने का प्रयास करें। मैंने संस्कृत भाषा के संदर्भ में थोड़ा बताया है। संस्कृत भाषा सीखने से आगमों की व्याख्या करना सरल हो सकता है।

भारत में संस्कृत के ग्रंथ एक निधि के रूप में हैं। जैनागमों के अध्ययन में वांङ्मय में संस्कृत भाषा सहयोगी बन सकती है। संस्कृत भाषा का अध्ययन करने वाला प्राकृत भाषा का भी अध्ययन ग्रहण कर सकता है। प्रयास करने से संस्कृत का अध्ययन हो सकता है। राकेशमणी त्रिपाठी भी संस्कृत के अच्छे जानकार हैं।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने कहा कि आज रक्षा बंधन का त्योहार है। यह त्योहार कब शुरू हुआ इस संदर्भ में व्यवस्थित इतिहास नहीं मिलता। पर ऐतिहासिक काल और प्राग् ऐतिहासिक काल से जुड़ी हुई अनेक घटनाएँ इस संदर्भ में प्राप्त होती हैं। कई घटना प्रसंग रक्षा बंधन से जुड़े बताए। सूत के धागे से जुड़ा इस पर्व का महत्त्व है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि मन इधर-उधर भटकता रहता है। मन से ही हमारी इंद्रियाँ चंचल बनती है, यह एक प्रसंग से समझाया।

संस्कृत वेत्ता प्राध्यापक राकेशमणी त्रिपाठी जो पारमार्थिक शिक्षक संस्था में संस्कृत भाषा का अध्यापन कराते हैं। केंद्र में भी चारित्रात्माओं को संस्कृत भाषा का अध्यापन करवाते हैं। उन्होंने बताया कि संस्कृत भाषा कठिन नहीं है, सरल है, संस्कृत भाषा काव्य भाषा है, इसका अपना वैशिष्ट्य है। संस्कृत वैज्ञानिक भाषा है। संस्कृत भाषा बहुत उपयोगी है। एक अक्षर से श्लोक की रचना हो सकती है। तेरापंथ धर्मसंघ में अनेक साधु-साध्वियाँ, समणी व मुमुक्षु बहनें संस्कृत भाषा का सम्यक् प्रकार से अध्ययन करती हैं।

मुनि ध्रुवकुमार जी ने संस्कृत भाषा में अपनी भावना अभिव्यक्त की। बाल मुनि जयेश कुमार जी ने भी संस्कृत भाषा में अपनी अभिव्यक्ति दी।

गौतम बोहरा-केलवा ने ३२ की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर से लिए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

बाल पीढ़ी को संस्कारवान बनाने का महत्त्वपूर्ण...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ज्ञानशाला के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि उदित कुमार जी ने ज्ञानशाला दिवस पर अपना वक्तव्य दिया।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी एवं प्रशिक्षिकाओं की सुंदर प्रस्तुति हुई। व्यवस्था समिति मंत्री नीतू सुतरिया, राजेंद्र ओस्तवाल, डॉ० महेंद्र कर्णावट, टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारख, सीमा डागा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति श्रीचरणों में रखी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि श्रद्धा और भय में फर्क होता है।

जैन धर्म में दीक्षा का विशेष महत्त्व है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २६ अगस्त, २०२१

विनम्रता की पराकाष्ठा, परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि ठाणं आगम में शास्त्रकार ने प्रव्रज्या के दस प्रकार बताए हैं। प्रवज्या करना-गति करना। प्रव्रज्या यानी विशेष रूप से जाना। संसार में इधर-उधर जाना, सामान्य जाना हो गया। अध्यात्म की ओर जाएँ, वह प्रव्रज्या-विशेष प्रविष्ट गति हो सकती है। वह विशेष गति है, साधुपन ले लेना।

प्रव्रज्या यानी दीक्षा के दस प्रकार बताए हैं। प्रव्रज्या ली जाती है, उसकी पृष्ठभूमि में क्या-क्या कारण हो सकते हैं? अपने-अपने कारण हो सकते हैं। वैराग्य आ गया और दीक्षा ले ली। यहाँ शास्त्रकार ने दीक्षा लेने में जो कारण बनते हैं, उनको दस प्रकारों में बाँटा है। और भी कारण हो सकते हैं।

प्रथम कारण–छंदा, इच्छा से यानी अपनी या दूसरों की इच्छा से ली जाने वाली। यह एक प्रसंग से समझाया। जैन दर्शन-मनन और मीमांसा–आचार्य महाप्रज्ञ पुस्तक पढ़ने से जैन दर्शन का अच्छा ज्ञान हो सकता है और भी अनेक ग्रंथ हैं। दूसरा है–रोषा-गुस्सा आने से दीक्षा ले लेना। यह भी एक प्रसंग से समझाया।

तीसरा कारण–परिद्यूना-दरिद्रता के कारण दीक्षा ले लेना। गरीबी दीक्षा लेने में निमित्त बन जाए। यह भी एक प्रसंग से समझाया। सात कारण और भी हैं, जिनके निमित्त से दीक्षा ली जा सकती है। इन तीन कारणों का भी विवेचन किया गया है, आगे और हो सकेगा।

माणक महिमा की विवेचना करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि माणक गणी के स्वास्थ्य में गड़बड़-गिरावट हो रही है। संत विवेचन कर रहे हैं। माणक गणी ने फरमाया कि पत्र लिखकर फाड़ देना मुझे ठीक नहीं लगता है। मैं ठीक हो जाऊँगा। सारे संत निराश होकर आ गए। माणक गणी के मन में दो बातें थीं। एक तो जन्म कुंडली के आधार पर उनकी ६२ वर्ष की उम्र होगी ऐसा अनुमान था। दूसरी बात उनको विश्वास था कि मैं ठीक हो जाऊँगा। जन्म कुंडली की कई बातें मिल गई थीं, इसलिए उन्हें जन्म कुंडली पर बहुत विश्वास था। इन दो कारणों से उत्तराधिकारी की नियुक्ति नहीं करनी यह निर्णय लिया गया था, न कोई इंगित किया।

आयुष्य का जन्म-कुंडली पर विश्वास नहीं करना चाहिए। कार्तिक बदी-३ को गुरुदेव को दस्त लगे और निढाल हो गए। शरणे सुनाए जा रहे हैं। दिनभर बेहोशी रही। बालचंद बैंगानी ने नाड़ देखकर संतों को बताया। रात ग्यारह बजे गुरुदेव को तीन हिचकी आई और श्वास शरीर से निकल गया। मुनियों के मुख से सहज आवाज निकली कि ओहो! अब म्हांरो के होगी। संघ अनाथ हो गया। संघ में सन्नाटा छा गया। रात्रि के बाद सूर्योदय भी नहीं है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

इंद्रियों का संवर करने से आत्मानुशासन का मार्ग प्रशस्त होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

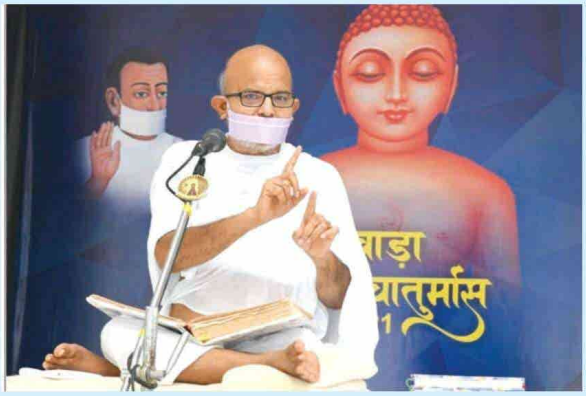

भीलवाड़ा, २३, अगस्त, २०२१

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने ठाणं आगम के १०वें अध्याय की व्याख्या करते हुए फरमाया कि अध्यात्म की साधना का एक अति महत्त्वपूर्ण अंग है—संवर। भीतर जाने के लिए संवर की आवश्यकता होती है। भीतर जाना है, तो बाहर का संवरण करना अपेक्षित होता है। जितना-जितना आदमी इंद्रिय विषयों के संपर्क में रहता है, उनमें आसक्त रहता है, उतना-उतना वह भीतर से मानो दूर हो जाता है।

जितना-जितना आदमी इंद्रिय विषयों के संपर्क का संयम करता है, आसक्ति का भी परित्याग करता है, साथ में मन, वचन, काया का भी संवर करता है, वह भीतर में रह सकता है। ज्यों-ज्यों आदमी उत्तम तत्त्व की प्राप्ति करता है, उत्तम तत्त्व से संवृत होता है, त्यों-त्यों विषयों से वह दूर हो जाता है।

शास्त्रकार ने यहाँ संवर के दस प्रकार बताए हैं। श्रोत-इंद्रिय संवर, चक्षु-इंद्रिय संवर, घ्राण-इंद्रिय संवर, रसन-इंद्रिय संवर, स्पर्शन-इंद्रिय संवर, मन संवर, वचन संवर, काय संवर, उपकरण संवर और सूची कुशाग्र संवर। ये दस चीजें ऐसी बताई हैं, जो इनमें संवर की प्रेक्टिकल साधना है। इन दस को संक्षेप में करें तो पाँच बातों में संवर समाविष्ट हो सकता है। इंद्रिय संवर, मनः संवर, वाक् संवर, काय संवर और उपकरण संवर।

यह संवरण एक प्रकार का अनुशासन भी है। इंद्रियों का संवर करने से आत्मानुशासन की दिशा में आदमी आगे बढ़ता है। मनःसंवर से मनोनुशासन, वाणी संवर से वचनोनुशासन, काय संवर से शरीर पर अनुशासन और उपकरणों का संवर करने से आत्मानुशासन की दिशा में आगे बढ़ सकता है। भीतर रहना और विषयासक्त रहना दोनों में तालमेल नहीं बैठ सकता है।

भीतर में जाने के लिए संवर की साधना, आत्मानुशासन की साधना अपेक्षित होती है। बाहर की अपनी दुनिया है, भीतर की अपनी दुनिया है। पदार्थों का उपयोग हो, उपभोग न हो। अनासक्ति एक ऐसा तत्त्व है, उसका और भीतर में रहने का अच्छा संबंध है। रहो भीतर, जीयो बाहर।

आदमी समुदाय में रहकर भी अनासक्त रहे तो भीतर में स्थिति हो सकती है। श्रोतेंद्रिय का अनावश्यक उपयोग न करें। इसी तरह चक्षु का संवर करें। देखना हो तो अनासक्ति रहे। घ्राणेंद्रिय का भी संवर हो। राग-द्वेष से बचें। रसनेंद्रिय संयम, अपेक्षित नहीं है, तो भोजन भी न करें। खाने में भी अनासक्ति न हो। स्पर्शनेंद्रिय का भी संयम करें। सुख पाने के लिए भी स्पर्श का उपयोग न करें।

मन की चंचलता को रोकें, वाणी का संयम करें। शरीर का भी संयम करो। काया की चंचलता को भी रोकें। उपकरणों का भी संवर हो। अध्यात्म की साधना के लिए देखें तो भीतर में जाने के लिए संवर की साधना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

माणक महिमा का विवेचन करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि माणकगणी ने वि०सं० १९५३ का चतुर्मास बीदासर में करवाया एवं मर्यादा महोत्सव लाडनूं किया। उसके बाद थली में विचरण कर वि०सं० १९५४ का चतुर्मास करने सुजानगढ़ पधारे। यह माणकगणी के जीवन का अंतिम चतुर्मास था। चार तीर्थ में तीव्र तपस्या हो रही है। आसोज माह में गुरुदेव के अतिसार की बीमारी हो गई। दवाई भी काम नहीं कर रही है। चिंता की बात हो गई। बीदासर से यती केवलचंद परीक्षण करने हेतु आए।

यती जी बोले जो करना है, सो कर लो, बात विचार करने जैसी है। संतों ने सुना तो चिंता हो गई। आगे की बात आगे।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। भीलवाड़ा के जज राजेश कटारा ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। पूज्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के उद्देश्यों को समझाया। मेघना जैन ने भी दर्शन किए। सम्यक्त्व दीक्षा स्वीकार करवाई।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि आस्था सम्यक् दर्शन का मूल मंत्र है। तत्त्व के प्रति या जिनवाणी के प्रति संदेह न हो। हमारी आस्था अडोल रहे। सम्यक् दर्शन का दूसरा गुण है निष्कांक्षा। जो साधना करता है, साधना के मार्ग में आगे बढ़ने वाले के लिए संशय किसी भी स्थिति में नहीं होना चाहिए।

व्यवस्था समिति द्वारा जज राजेश कटारा का मोमेंटो से सम्मान किया। विमला आंचलिया वाशी, मुंबई ने ३१ की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर से लिए। कंवरलाल झाबक, ललित दुगड़, स्नेहलता झाबक ने अपनी भावना श्रीचरणों में व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि आत्मरमण करना, भीतर में जाना सीखें।

जिज्ञासा समाधान होने से मानसिक शांति होती है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २५ अगस्त, २०२१

महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने ठाणं आगम के दसवें अध्याय के तेरहवें सूत्र की व्याख्या करते हुए फरमाया कि एक शब्द है—समाधि-समाधान, शांति। समाधान कैसे मिले? किसी प्रश्न का सम्यक् उत्तर मिल जाता है, तो समाधान मिल जाता है। जिज्ञासा को शांति मिल जाती है।

जैसे काँटा चुभता रहता है, काँटा निकल जाता है, तो आराम मिल जाता है। मन का प्रश्न भी कुछ अंश में मानो एक काँटे जैसा है। यह बात कैसे है, बार-बार चिंतन में आता है। ज्योंहि उसका ठीक उत्तर मिल गया, बार-बार प्रश्न मन में आ रहा था, उसको समाधान मिल गया। शांति मिल गई। इसलिए उत्तर मिलना एक बात है। समाधान मिलना कुछ दूसरी बात हो सकती है। कभी-कभी उत्तर तो मिल जाता है, पर समाधान नहीं मिलता है।

प्रश्न करने वाला स्वतंत्र है, पर उत्तरदाता तो परतंत्र है। उत्तरदान की बात एक महत्त्वपूर्ण चीज है। उत्तर देने वाला व्यक्ति ध्यान दे कि मैं कितना सटीक समाधान दे सकता हूँ। सटीक जबाव देना उत्तरदाता की सफलता होती है। उत्तर देने वाले के पास उस विषय का पर्याप्त ज्ञान होता है, तो वह ठीक उत्तर देने में कामयाब हो सकता है। प्रश्नकर्ता भी ध्यान दे कि किस व्यक्ति से कौन सा प्रश्न पूछूँ जो पर्याप्त उत्तर दे सके?

ऐसा उत्तरदाता चाहिए जिसके उत्तर में समाधान भी निहित हो। ठाणं में समाधि के दस प्रकार बताए हैं। जिनसे आत्मा को समाधान मिल सके, कर्मों की समस्या को समाधान मिल सके, दुःखों को समाधान मिल सके। पहला प्रकार है—प्राणातिपात विरमण-हिंसा से मुक्त हो जाओ तो आंतरिक सुख में समाधि मिल सकती है।

दूसरा प्रकार है—मृषावाद विरमण-झूठ बोलने से विरत हो जाओ। अदतादान विरमण चोरी करने से असमाधि। इसी तरह मैथुन विरमण और परिग्रह विरमण में भी समाधि मिल सकती है। पाँच समितियों के पालन से समाधि रह सकती है। साधु पाँच महाव्रत और पाँच समिति की अखंड आराधना करे तो चित्त समाधि रह सकती है।

समाधि और असमाधि हमारे हाथ में ही है, दूसरे के हाथ में तो निमित्त रूप में हो सकती है। हर किसी बात को ग्रहण मत करो। असमाधि से मुक्त रहोगे। बात को जानों-सुनो और छोड़ो। शास्त्रकार ने दस प्रकार समाधि के बताए हैं, हम इनका प्रयोग करके समाधिस्त बनाने का प्रयास करें।

माणक महिमा की विवेचना करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि माणकगणी विराजमान है, मुनि मगनलाल जी आदि संत उनके उपपात में स्थित हैं। गुरुदेव को बहुत गंभीर बात निवेदन करी है। उस समय के वार्तालाप को विस्तार से समझाया। अनेक तरीको से गुरुदेव को मुनि मगनलाल जी सुझाव दे रहे हैं।

भीलवाड़ा संभाग के अनेक पत्रकारगण ने पूज्यप्रवर की सन्निधि में उपस्थित होकर आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्यप्रवर ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि पत्रकार हवा का काम करते हैं जिस प्रकार पुष्प की सुगंध हवा से फैलती है उसी प्रकार पत्रकार समाज में अच्छी बातें फैलाने का कार्य करते हैं। पत्रकारिता में यथासंभव नैतिकता और ईमानदारी रखनी चाहिए।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। सम्यक् दीक्षा ग्रहण करवाई।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि जिसका सम्यक्त्व और सम्यक् दर्शन पुष्ट होता है, वो मोक्ष प्राप्ति की ओर अग्रसर हो सकता है। मुनि मेघकुमार के प्रसंग को समझाया।

साध्वी विधिप्रभा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अक्षय छाजेड़, शांतिलाल चोरड़िया (प्रज्ञा चक्षु) ऐश्वर्या जैन, अर्जुनलाल मेड़तवाल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि हम पूज्यप्रवर के प्रवचन दर्पण की तरह यथार्थ रूप में सुने।

व्यक्ति को जीवन में निर्अहंकार रहना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २४ अगस्त, २०२१

तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के भीतर अनेक वृत्तियाँ होती हैं। कुछ वृत्तियों को दुर्वृति कहा जाता है। कुछ वृत्तियाँ सुवृत्ति के रूप में होती हैं। जैसे आवेश-गुस्सा करना एक दुर्वृति है। क्षमाशील रहना सुवृत्ति है।

दो प्रकार की वृत्तियाँ सामान्य आदमी में हो सकती हैं। शास्त्रकार ने प्रस्तुत सूत्र में एक बात बताई है, वह एक दुर्वृति है। वह है—मद-अहंकार। दस ऐसे प्रसंग-स्थान, कारण हैं जिनके संदर्भ में आदमी अपने आपको चरम कोटि का मान लेता है, अहंकार में चला जाता है।

पहला कारण है—जाति का मद-ननिहाल पक्ष का मद। दूसरा कुल का मद, तीसरा बल का मद और चौथा रूप का मद। इनसे अहंकार आ सकता है। तप का अहंकार, श्रुत का अहंकार, लाभ का अहंकार, ऐश्वर्य का अहंकार हो सकता है। नौवाँ मद है कि मेरे पास नागकुमार सुपर्णकुमार देव आते हैं। दसवाँ है कि साधारण पुरुषों के ज्ञान-दर्शन से अधिक अवधि ज्ञान, अवधिदर्शन मुझे प्राप्त हुए हैं। मेरे पास अतीन्द्रिय ज्ञान है।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

जैन धर्म में दीक्षा का विशेष...

(पृष्ठ २ का शेष)

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। समता जैन ने ११ की तपस्या के प्रत्याख्यान किए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि समाज संबंधों की एक शृंखला है। उसकी एक ईकाई है—परिवार। मनुष्य जन्म से लेकर जीवन भर परिवार में रहता है, संबंधों को निभाता है। हमारा मन भी उन्मत्त हाथी की तरह सब जगह परिभ्रमण करता है। हमें ज्ञान धर्म अंकुश से मन को वश में करना चाहिए। मधुर व्यवहार से परिवार को सुखी बनाएँ। हम रिश्तों को मधुर बनाएँ।

साध्वी मंजुलयशा जी ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी।

उपासक प्रेक्षा प्रशिक्षक ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। विदित चोरड़िया, विद्या डागा, संजय बोरदिया, चंद्रा बाबेल ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

इन्कम टेक्स असिस्टेंट कमिश्नर दीपक पारीख श्रीचरणों में उपस्थित हुए और अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ आस्तिक विचारधारा का आधार अध्यात्म है, जबकि नास्तिक विचारधारा भौतिकवाद से संपृक्त है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

शपथ ग्रहण समारोह

बोलाराम।

तेरापंथ भवन में तेममं का शपथ ग्रहण समारोह साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। तेममं में दमयंती सुराणा को अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया।

साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में नारी शक्ति के उन्नयन के लिए आचार्य तुलसी ने अभातेममं के तत्त्वावधान में शाखा मंडलों का गठन किया।

साध्वी ज्योतियशा जी ने कार्यक्रम का संयोजन किया। साध्वी ज्योतियशा जी, साध्वी सुरभिप्रभा जी ने गीत का संगान किया। प्रेरणा सुराणा ने गीत से सभी को भावविभोर कर दिया।

इस अवसर पर अभातेममं कार्यकारिणी सदस्य प्रभात दुगड़ ने नव मनोनीत अध्यक्ष दमयंती सुराणा को गोपनीयता की शपथ दिलाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित की। नव अध्यक्ष ने अपनी टीम की घोषणा करते हुए शपथ दिलवाई। जैन सेवा संघ के अध्यक्ष अशोक बरमेचा, कोषाध्यक्ष अशोक संचेती, तेरापंथ महासभा के कार्यकारिणी सदस्य मुकेश सुराणा, तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष बाबूलाल बैद ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर राकेश सुराणा, टीपीएफ के पंकज संचेती, तेममं, हैदराबाद की उपाध्यक्ष सरला मालू आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन नव मनोनीत मंत्री स्नेहा बांठिया ने किया।

सेवा कार्य

नोखा।

अभातेममं के निर्देशानुसार अन्नपूर्णा योजना के तहत तेरापंथ महिला मंडल द्वारा इंदिरा रसोई योजना, जहाँ जरूरतमंद व्यक्तियों के भोजन की व्यवस्था प्रतिदिन सुबह और शाम दी जा रही है। महिला मंडल की बहनों ने इंद्रा रसोई योजना, नोखा के अध्यक्ष श्रीनिवास झंवर को सहयोग राशि भेंट की गई। मंजु बैद ने कहा कि अन्न का आदर करें तथा जितनी भूख हो उतना ही भोजन थाली में लें।

इस अवसर पर जयश्री भूरा, कुसुम छाजेड़, सरोज बैद व मंत्री प्रीति मरोठी उपस्थित थे।

शपथ ग्रहण समारोह

हासन।

तेरापंथ भवन, मैसूर में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में महिला मंडल का शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि तेरापंथ महिला मंडल धर्मसंघ की जागरूक संस्था है। अभातेममं की राष्ट्रीय सदस्या एवं मैसूर तेममं की पूर्व अध्यक्ष सुधा नौलखा ने नव मनोनीत अध्यक्षा संगीता कोठारी को अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई। नव मनोनीत अध्यक्ष ने साध्वीश्री जी के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने अपनी टीम की घोषणा की एवं शपथ दिलाई। महासभा के सदस्य एवं ज्ञानशाला के प्रभारी महावीर देरासरिया ने आगंतुक महिला मंडल का स्वागत किया।

महिला मंडल मंत्री अनिता बाफना ने नवनिर्वाचित महिला मंडल टीम के प्रति शुभकामनाएँ दी एवं आभार व्यक्त किया। नर्मता सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर हासन महिला मंडल ने सामुहिक संगान के द्वारा अपनी भावनाएँ प्रस्तुत की।

शपथ ग्रहण समारोह

किशनगढ़।

तेयुप एवं महिला मंडल की नव गठित कार्यकारिणी ने मुनि देवेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में सामुहिक शपथ ग्रहण की। तेयुप किशनगढ़ के नवनिर्वाचित अध्यक्ष मनीष सुराणा एवं महिला मंडल अध्यक्ष बिमल भंडारी ने शपथ दिलाई। तेयुप एवं महिला मंडल किशनगढ़ की नवगठित टीम ने सामुहिक रूप से शपथ ली। इससे पहले महिला मंडल की पूर्व अध्यक्षा प्रेम देवी गेलड़ा एवं मंत्री रजनी कर्णावट ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

इस अवसर पर महिला मंडल की नवनिर्वाचित अध्यक्षा अंजु छाजेड़, मंत्री करुणा चंडालिया एवं तेयुप मंत्री निखिल संचती ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन अजय कवाड़ ने किया।

कनक कला कौशल प्रतियोगिता

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में कनक कला कौशल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी ने प्रमुखाश्री जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। इस हस्तकला प्रतियोगिता में कलाकृति की सराहना की। प्रतियोगिता में प्रथम रजनी संचेती, द्वितीय दीया बाफना, हिमांशी भंसाली, आर्या संचेती, चित्रा बाफना, चेतना संचेती, सीमा दक की प्रविष्टियाँ भी सराहनीय थी।

प्रतियोगिता के निर्णायकगण थे–विजयलक्ष्मी मणोत एवं हेमलता सुराणा। मंत्री सीमा छाजेड़, सहमंत्री वंदना भंसाली एवं कार्यकर्ता बहनें उपस्थित थी। इस अवसर पर तपस्विनी बहन पद्मा मेहर का भी सम्मान किया गया।

कनक कला कौशल प्रतियोगिता

पर्वत पाटिया।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं ने समणी निर्देशिका ज्योतिप्रज्ञा जी, समणी मानसप्रज्ञा जी के सान्निध्य में कनक कला कौशल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम शुरू किया गया। मंगलाचरण मंडल की बहनों ने किया। समणी ज्योतिप्रज्ञा जी ने साध्वीप्रमुखाश्री जी के बारे में बताया। रंजना कोठारी ने अपने भाव व्यक्त किए और जजमेंट करने आई हुई टीचर हंसा दुबे का परिचय दिया।

हंसा ने अपने भाव व्यक्त किए और निर्णय दिया। प्रतियोगिता में आठ बहनों ने भाग लिया। प्रथम प्रतिक्षा कोठारी, द्वितीय अंजु धाकड़, तृतीय सुनीता पारख और चतुर्थ ममता गुलगुलिया रहे। सभी को सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। स्वागत वक्तव्य मंडल अध्यक्ष ललिता पारख व आभार ज्ञापन चेष्टा कदमालिया ने किया। संचालन मनोज देवी गंग ने किया।

कनक कला कौशल प्रतियोगिता

बालोतरा।

साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में अष्टमी की गोष्ठी आयोजित हुई। इसके अंतर्गत अभातेममं द्वारा निर्देशित तेममं के द्वारा कनक कला कौशल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया।

अध्यक्ष निर्मला संकलेचा द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया। मंत्री संगीता बोथरा ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रतियोगिता में भाग लिया मीना ओस्तवाल और संतोष देवी बागरेचा ने, दोनों को ही प्रथम स्थान पर रखा गया एवं दोनों को महिला मंडल की तरफ से सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम में परामर्शक नारायणी देवी छाजेड़, पी०पी० देवी ओस्तवाल, लुणी देवी गोलछा, उपाध्यक्ष चंद्रा बालड़, रानी बाफना, सहमंत्री इंदु भंसाली, रेखा बालड़, कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा, निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल, कन्या मंडल प्रभारी श्वेता सालेचा आदि पूर्व अध्यक्ष सहित लगभग १०० बहनें उपस्थित थे।

व्यक्ति को जीवन में निर्अहंकार...

(पृष्ठ ३ का शेष)

होना यह अच्छी बात होती है, कुछ प्राप्त होने पर भी आदमी घमंड में न जाए। विद्या विनय से शोभित होती है। मैं-मैं का अहंकार न हो कि मैं कितना ज्ञानी हूँ। व्यवहार में किसी प्रकार का घमंड नहीं करना चाहिए। क्षयोपशम है, अनुकूलता है, तो तप में भी आगे बढ़ें पर तप का भी घमंड न आए। सत्ता भी सेवा करने के लिए है न कि सुख-सुविधा के लिए। दूसरों को सुख दें अपनी सत्ता से तो सत्ता उपहार है। वरना सत्ता तो भार है।

राजनीति में तो सत्ता का भरोसा भी नहीं है, आज है, कल न भी हो। उसका घमंड मत करो। कई बार राजा का भी तख्ता पलट हो जाता है। पुण्य का योग है, वो पाप बंध का निमित्त न बने। रूप का भी अहंकार न हो। रूप सुंदर तो पुद्गलों का है, अंदर क्या-क्या पड़ा है, यह सोचें। शरीर की अपेक्षा चेतना पर ध्यान दें। कपड़ों को, बाहर के गहनों को ज्यादा महत्त्व मत दो। ज्यादा महत्त्व भीतरी गुणों को दो। यह एक प्रसंग से समझाया कि बड़े आदमी मेरे कपड़े देखने के लिए नहीं ज्ञान की चर्चा करने आते हैं। ज्ञान पर ध्यान दें।

ज्ञान का बहुत मूल्य है। साधना का बहुत मूल्य है। चेहरे को ज्यादा मत देखो, चारित्र को और ज्ञान को देखो। चेहरे का क्या अहंकार करना। शास्त्रकार ने कहा है कि इन दस बातों का अति अहंकार मत करो। गृहस्थों के पास पैसा-धन होता है, पर उसका अहंकार न करें। पैसे का दुरुपयोग भी मत करें, न उसके प्रति ज्यादा मोह हो। हमें अपने जीवन में जो उपलब्धियाँ प्राप्त है, उनके घमंड से बचना चाहिए। निर्अहंकारता का प्रयास करना चाहिए। जो कुछ जितना प्राप्त है, ज्ञान का, शक्ति का बढ़िया उपयोग जो कर सके करें। अच्छी प्रेरणा लें, आगे बढ़ें यह कामना है।

पूज्यप्रवर ने माणक महिमा की व्याख्या करते हुए फरमाया कि गुरु सा केवलचंद की बात सुनकर संत चिंतित हो गए। गुरुदेव से आगे की व्याख्या करने हेतु निवेदन करने की संत योजना बनाते हैं। मुनि मगनलाल जी की अगवानी में संत मंडल पूज्यप्रवर की निश्रा में पहुँचकर अपने मन की भावना निवेदन करते हैं। माणकगणी ने फरमाया सुविनीता संत धीरज रखें।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि जिसकी श्रद्धा अडौल नहीं रहती है, वह अपनी आत्मा का हित नहीं कर सकता। हमारा इतर दर्शनों के प्रति आकर्षण न हो, मूढ़ता के तीन प्रकार बताए गए हैं–लोक मूढ़ता, देव मूढ़ता, पाखंड मूढ़ता। सम्यक् दृष्टि का आराधक कभी यह नहीं सोचता कि मैं तीर्थ यात्रा में जाकर नदियों में स्नान कर पवित्र हो जाऊँ। अरिहंत हमारे देव हैं।

साध्वी समताप्रभा जी ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में कमलेश सिरोहिया, पीयूष रांका, सिद्धि सेठिया, डॉ० हितेश नौलखा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

सत्र 2019-21

✻ अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुम्बई साथीगण	(₹75,00,000)
✻ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19	(₹31,00,000)
✻ श्री मदनलाल महेन्द्र तातेड़, मुम्बई	(₹13,00,000)
✻ श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोथरा, लाडनूं-इस्लामपुर	(₹11,00,000)
✻ श्री अशोक श्रेयांश बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	(₹11,00,000)
✻ श्री फतेहचंद-संतोष देवी, धीरज, पूजा, अर्हम सेठिया, लुधियाना	(₹5,51,000)
✻ श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	(₹5,00,000)
✻ श्री उमरावमल, प्रमोद, महेन्द्र, नरेन्द्र छाजेड़, रामगढ़ शेखावाटी-कोलकाता-जयपुर	(₹5,00,000)
✻ श्री माणकचंदजी सतीशजी ललितजी चोरड़िया (अमराईवाड़ी ओढ़व)	(₹5,00,000)

शपथ ग्रहण समारोह

गंगाशहर।

तेरापंथ धर्मसंघ में नया इतिहास बनाते हुए मुनि शांति कुमार जी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशानुसार तेयुप व तेरापंथ किशोर मंडल, गंगाशहर का सत्र-२०२१-२२ के लिए व टीपीएफ, बीकानेर का सत्र-२०२१-२३ के लिए नवगठित टीम का संयुक्त रूप से शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। नव मनोनीत तेयुप अध्यक्ष विजेंद्र छाजेड़ ने तेयुप, गंगाशहर टीम की घोषणा करते हुए सभी पदाधिकारियों, कार्यसमिति सदस्यों के साथ अभातेयुप के कार्यसमिति सदस्य व तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष पवन छाजेड़ से शपथ ग्रहण की। किशोर मंडल की नवगठित टीम को पवन छाजेड़ ने शपथ दिलाई।

टीपीएफ, बीकानेर के नवमनोनीत अध्यक्ष मिलाप चौपड़ा ने अपनी कार्यसमिति टीम की घोषणा की। उनकी नवगठित टीम को प्रो० डी०सी० जैन ने शपथ दिलाई। तेयुप अध्यक्ष विजेंद्र छाजेड़ ने अभातेयुप के आयामों—सेवा, संस्कार और संगठन के बारे में विस्तार से बताया।

अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य पीयूष लुणिया, तेरापंथी सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान अध्यक्ष महावीर रांका, तेममं अध्यक्ष ममता रांका, अणुव्रत समिति के मनीष बाफना, पूर्व महापौर नारायण चौपड़ा, तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष पवन छाजेड़ आदि अनेक गणमान्य सदस्यों ने नवमनोनीत तेयुप अध्यक्ष विजेंद्र छाजेड़, टीपीएफ अध्यक्ष मिलाप चोपड़ा, किशोर मंडल संयोजक कुलदीप छाजेड़ सहित सभी चयनित पदाधिकारियों को शुभकामनाएँ और मंगलकामनाएँ प्रेषित की। साथ ही केंद्रीय मंत्री अर्जुन मेघवाल, उच्च शिक्षा मंत्री भंवरसिंह भाटी, कोलायत प्रधान पुष्पादेवी सेठिया का बधाई संदेश प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन मोहित संचेती ने किया।

अणुव्रत कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में बोलाराम तेरापंथ भवन में विराजित साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में अणुव्रत कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेममं, बोलाराम द्वारा मंगलगान से किया गया।

साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि भावविशुद्धि से ही व्यक्ति अपनी जीवनधारा को मोड़ सकता है। अणुव्रत संयम की चेतना को जागृत कर भावशुद्धि की प्रेरणा प्रदान करता है। नैतिकता, ईमानदारी और चारित्रिक शुद्धि से ही व्यक्ति अपने आपको पूर्ण स्वस्थ रख सकता है।

इस अवसर पर साध्वी ज्योतियशा जी ने कार्यक्रम का संयोजन करते हुए कहा कि सावन मास कर्म निर्जरा का सुंदर अवसर है। संयम चेतना जागृत करने का अवसर है। त्याग-तप में आगे बढ़ने का समय है। अणुव्रत को जीवन में अपनाने की प्रेरणा देते हुए साध्वी ज्योतियशा जी, साध्वी सुरभिप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। बोलाराम कन्या मंडल से प्रेरणा निकिता योमा ने अणुव्रत शब्द चित्र के माध्यम से सुंदर प्रस्तुति दी। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश भंडारी ने अध्यक्षीय वक्तव्य में आगंतुकों का स्वागत करते हुए अणुव्रत से जुड़ने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित करण सिंह बरड़िया व नीरज सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति के मंत्री अशोक मेडतवाल ने किया।

इस अवसर पर जैन सेवा संघ के कोषाध्यक्ष अशोक संचेती, विनोद संचेती, तेरापंथ सभा के सहमंत्री राकेश सुराणा, जयसिंह सुराणा, तेयुप, हैदराबाद के अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा, श्रवण कोठारी, सुमित, बोलाराम तेरापंथ सभा के मंत्री अनिल नवलखा, अणुव्रत समिति से उपाध्यक्ष अनिल कातरेला, सरोज भंडारी, प्रेम पारख, केवलचंद जैन आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। मानसरोवर के गायक नवनीत छाजेड़ ने गीत का संगान किया। अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष प्रकाश कोठारी ने धन्यवाद दिया। आगंतुक अतिथियों को अणुव्रत समिति ने साहित्य द्वारा सम्मानित किया।

त्रि-दिवसीय कार्यक्रम

राजलदेसर।

साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु का जन्म दिवस एवं बोधि दिवस मनाया गया। डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु सिंह पुरुष थे। आद्य प्रवर्तक भिक्षु स्वामी के पास सकारात्मक नजरिया और सकारात्मक चिंतन था। समारोह में साध्वी धर्मयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी एवं साध्वी कुमुदप्रभा जी ने भिक्षु स्वामी के चरणों में भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा, महिला मंडल एवं कन्या मंडल की तरफ से आचार्य भिक्षु का गुणगान किया गया। सभा अध्यक्ष नवरत्न मल बैद ने साध्वीवृंद का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन कलिका चोपड़ा ने किया।

डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि चातुर्मास अहं से अर्हं की स्थापना है। समदर्शी प्रियदर्शी बनने का संकल्प है। भोग से त्याग का अभियान है। अतः अपेक्षित है हम सब अनावेश अनासक्ति एवं अनाग्रह की विशेष आराधना करें। इस अवसर पर साध्वीश्री द्वारा मर्यादा पत्र का वाचन किया एवं श्रावक-श्राविकाओं ने त्याग-प्रत्याख्यान किए। साध्वीश्री जी की प्रेरणा से स्वास्तिक के आकार में नवकार महामंत्र का जप अनुष्ठान करवाया गया।

तेरापंथ स्थापना दिवस पर डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि गुरु पूर्णिमा के दिन हमें एक महान गुरु एवं एक महान संघ मिला। आज के दिन आचार्य भिक्षु ने शुद्ध चारित्र ग्रहण किया और वह दिन तेरापंथ का स्थापना दिवस बन गया। इस अवसर पर साध्वी धर्मयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी, साध्वी कुमुदप्रभा जी ने गीत, कविता, वक्तव्य के माध्यम से प्रस्तुति दी। तेरापंथी सभा, महिला मंडल, कन्या मंडल ने गीतिका एवं विचारों के माध्यम से अपनी भावनाएँ प्रकट की। रात्रि में धम्म जागरण का आयोजन किया गया। जिसमें साध्वीवृंद एवं श्रावक-श्राविकाओं ने भजनों की सुमधुर प्रस्तुतियाँ दी।

शपथ ग्रहण समारोह

कोयंबटूर।

मुनि सुधाकर जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा का शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन हुआ। जिसमें निवर्तमान अध्यक्ष निर्मल रांका ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्रेम सुराणा को तेरापंथ सभा अध्यक्ष की शपथ दिलाई। प्रेम सुराणा ने अपनी नवनिर्वाचित कार्यसमिति के सदस्यों को शपथ दिलाई। मुनि सुधाकर जी ने कहा कि मानव मानव में विचार और संसार का भेद स्वाभाविक है, किंतु हमें विरोधी के प्रति भी उदारता और सहनशीलता की भावना का विकास करना चाहिए।

मुनि नरेश कुमार जी ने कहा कि संयम जीवन का शृंगार है। संयम से ही व्यक्तित्व विकास संभव है। इस अवसर पर निर्मल रांका एवं प्रेम सुराणा ने अपने विचार रखे। जैन विद्या की व्यवस्थापक वंदना पारख ने जैन विद्या के विषय पर अपने महत्त्वपूर्ण विचार रखे एवं जैन विद्या परीक्षाओं के प्रमाण पत्र वितरित किए गए। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल संयोजिका ख्याति सेमलानी ने किया।

जैन संस्कार विधि

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

दिल्ली।

ओमवीर कन्नोत की सुपौत्री व समीर-हर्षना कन्नोत (गुर्जर-जाट परिवार) रिठौली हरियाणा निवासी दिल्ली उत्तम नगर प्रवासी की पुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक पवन गीड़िया, तेयुप दिल्ली के उपाध्यक्ष व संस्कारक विकास सुराणा, जैन संस्कार विधि सहप्रभारी मनीष बरमेचा ने संपूर्ण विधि एवं मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

पूरे परिवार ने अपनी स्वेच्छ अनुसार त्याग-प्रत्याख्यान भी लिए। मंजू शर्मा (नानी माँ) (ब्राह्मण परिवार) ने पधारे हुए सभी संस्कारकों का आभार ज्ञापित किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

दिल्ली।

अशोक सेठिया के सुपुत्र हर्ष मोहित सेठिया श्रीडूंगरगढ़ निवासी, दिल्ली प्रवासी के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुभाष दुगड़ व संस्कारक अशोक सेठिया ने संपूर्ण विधि एवं मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न कराया गया।

संस्कारक सुभाष दुगड़ ने सभी का तेयुप, दिल्ली की तरफ से आभार ज्ञापित किया। संस्कारक अशोक सेठिया ने पारिवारिकजनों को जैन संस्कार विधि के बारे में बताते हुए त्याग-प्रत्याख्यान करवाए।

कार्यक्रम में प्रदीप सिंघी व किशोर मंडल संयोजक सौरभ सिंघी व पारिवारिक जनों की उपस्थिति रही।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

दिल्ली।

सुरेंद्र जतिन सुखीजा (पंजाबी) दिल्ली प्रेम नगर, पटेल नगर के नए प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक पवन गीड़िया व तेयुप, दिल्ली सहप्रभारी व संस्कारक मनीष बरमेचा ने संपूर्ण विधि एवं मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न कराया।

संस्कारक मनीष बरमेचा ने सभी का तेयुप, दिल्ली की तरफ से आभार ज्ञापित किया। तेयुप द्वारा सुखीजा परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

बालोतरा।

मोतीलाल जितेंद्र कुमार संदीप कुमार बालड़ के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक डॉ० रमेश भंसाली द्वारा संपन्न करवाया गया। तेयुप मंत्री नवीन सालेचा द्वारा परिवारजनों को बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित की गई।

संस्कारक की प्रेरणा से सभी ने त्याग-प्रत्याख्यान किए। मंगलपाठ सुनकर संस्कार विधि संपन्न हुई।

पाणिग्रहण संस्कार

कामरेज, सूरत।

रायकोट-सेडम (कर्नाटक) निवासी कीम प्रवासी आनंद भिषेटी की सुपुत्री भवानी का शुभ पाणिग्रहण संस्कार भीटा (राजस्थान) निवासी, कामरेज प्रवासी धनराज ओस्तवाल के सुपुत्र सोनू ओस्तवाल के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़ व मनीष मालू व कामरेज के जनक पोखरना ने मंगल मंत्रोच्चारपूर्वक संपन्न करवाया। अंत में वर-वध को आशीर्वाद प्रदान करते हुए मंगलभावना प्रेषित की।

पाणिग्रहण संस्कार

बालोतरा।

बालोतरा निवासी राजेंद्र कुमार वैदमूथा की सुपुत्री नेहल का पाणिग्रहण संस्कार बालोतरा निवासी जवेरीलाल सालेचा के सुपुत्र जयेश के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक रमेश भंसाली और रोशन बागरेचा ने संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल और मंत्री नवीन सालेचा ने वर-वधू को मंगलभावना पत्रक भेंट किया। इस अवसर पर तेममं निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्क्ष देवी ओस्तवाल उपस्थित थी।

✦ जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

स्वतंत्रता दिवस के विविध आयोजन

ध्वहारोजण कार्यक्रम

पर्वत पाटिया।

७५वें स्वतंत्रता दिवस का आयोजन डॉ० समणी निर्देशिका ज्योतिप्रज्ञा जी, समणी मानसप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा एवं तेयुप के निर्देशन में किशोर मंडल द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत ध्वजारोहण के साथ हुई, मैनेजिंग ट्रस्टी लक्ष्मीलाल गन्ना, सभा अध्यक्ष कमल पुगलिया, तेयुप अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार, महिला मंडल अध्यक्ष ललिता पारेख द्वारा समणीद्वय की उपस्थिति में ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत समणीजी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। सभा अध्यक्ष कमल पुगलिया एवं तेयुप अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार ने अपने वक्तव्य से आजादी के अमृत महोत्सव की शुभकामनाएँ दी। गौरव सिसोदिया, हर्षि भोगर, कन्या मंडल ने देशभक्ति गीत, ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा नृत्य, देशभक्ति गीत की प्रस्तुति दी गई। समणी मानसप्रज्ञा जी ने अपने उद्बोधन के साथ भारतीय संस्कृति से संबंधी कुछ प्रश्नोत्तर भी श्रावक समाज से किए। समणी डॉ० ज्योतिप्रज्ञा जी ने अपना उद्बोधन दिया।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण में किशोर मंडल का महत्त्वपूर्ण आयाम संकल्प यात्रा के बैनर का अनावरण किया गया एवं किशोर मंडल सह-संयोजक पारस गंग ने इस आयाम द्वारा पूर्व में किए गए संकल्पों की जानकारी दी। समणी जी के मंगलपाठ से कार्यक्रम का समापन किया। कार्यक्रम का संचालन किशोर मंडल संयोजक जिग्नेश गांधी एवं सह-संयोजक पारस गंग ने किया। कार्यक्रम की सफलता में पूरी किशोर मंडल ने अपने श्रम का नियोजन किया।

सांझ का ढलता सूर्य है - बुढ़ापा

उज्जैन।

साध्वी कीर्तिलता जी के सान्निध्य में दादा-दादी, नाना-नानी का विशेष कार्यक्रम रखा। कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रीय गीत से हुआ। उससे पूर्व तेयुप द्वारा राष्ट्रीय ध्वजारोहण का कार्यक्रम संपादित हुआ। साध्वी कीर्तिलता जी ने कहा कि बुढ़ापा बिना बुलाए मेहमान है। यह सांझ का ढलता हुआ सूर्य है। सूर्य ढलने से पूर्व अध्यात्म का छोटा सा दीप जला दो। वह दीप आपके जीवन को प्रकाशमान कर देगा।

साध्वी शांतिलता जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। साध्वी पूनमप्रभा जी ने गीत का संगान किया। साध्वी श्रेष्ठप्रभा जी ने सबको ध्यान के द्वारा भीतर झांकने की प्रेरणा दी। साध्वीश्री जी के सान्निध्य में अभिनव सामायिक का कार्यक्रम हुआ, जिसमें लगभग ६० सामायिक हुई। मधुबाला बोरदिया ने १६ की तपस्या की।

सेवा कार्य

साउथ हावड़ा।

तेयुप ने ७५वें स्वतंत्रता दिवस पर जरूरतमंद बच्चों के बीच पाठ्य-सामग्री वितरण का कार्यक्रम किया। हावड़ा सम्मिलनी सेंट्रल चिंतामणि मैदान में लेकिशा एवं लविशा चोरड़िया के प्रथम जन्मदिन के उपलक्ष्य पर उम्मेद-आदेश चोरड़िया के सहयोग से सेवा कार्य किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। परिषद के उपाध्यक्ष मनीष कुमार बैद ने सभी का स्वागत-अभिनंदन किया। ६० बच्चों को पाठ्य सामग्री वितरण परिषद के युवाओं एवं उनके पारिवारिकजनों द्वारा किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु परिषद के २५ सदस्यों सहित सम्मिलनी सेंट्रल चिंतामणि मैदान से चिरंजीवी घोष, जेपी गुप्ता, दीपांदु चक्रवर्ती, संजीव सिंह एवं सीमा नसकर वार्ड काउंसलर ने कार्यक्रम को सफल बनाया। परिवार से आदेश चोरड़िया ने परिषद के कार्यों की सराहना की और आभार व्यक्त किया। मंत्री गगनदीप बैद एवं संयोजक विनीत लोढ़ा ने सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजक विनीत लोढ़ा, मनीष बैद, सह-संयोजक दीपक नखत एवं आदेश चोरड़िया का श्रम रहा।

ध्वजारोहण कार्यक्रम

टोहाना।

तेयुप द्वारा स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में तेरापंथी सभा में पहली बार राष्ट्रीय ध्वजारोहण सुरेंद्र गर्ग व तेयुप के अध्यक्ष अमित जैन द्वारा किया गया। कोविड-१९ कैंप का शुभारंभ सुरेंद्र गर्ग द्वारा किया गया। तेयुप द्वारा टीका लगवाने वाले नागरिकों को कोलकाता महासभा द्वारा निर्मित कोरोना केयर किट भी दी गई। इस अवसर पर १९४ नागरिकों ने कैंप का लाभ उठाते हुए टीका लगवाया।

मंत्री योगेश जैन, उप-प्रधान अमन जैन, संजय जैन सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं तेरापंथ समाज व टोहाना के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। तेयुप अध्यक्ष अमित जैन एवं संगठन मंत्री शुभम जैन ने अपने विचार व्यक्त किए।

स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम

राजसमंद।

अणुव्रत विश्व भारती में स्वतंत्रता दिवस समारोह अशोक डूंगरवाल उपाध्यक्ष अणुविभा की अध्यक्षता एवं गणेश कच्छारा, जगजीवन चोरड़िया, संयुक्त मंत्री अणुविभा, डॉ० वीरेंद्र महात्मा, अध्यक्ष अणुव्रत समिति राजसमंद, साहित्यकार एवं शिक्षाविद् नरेंद्र शर्मा निर्मल, एडवोकेट महेश पगारिया, नेमीचंद रांका, बंकेश सनाढ्य के मुख्य आतिथ्य में मनाया गया।

अणुविभा के उपाध्यक्ष अशोक डूंगरवाल एवं संयुक्त मंत्री जगजीवन चोरड़िया द्वारा ध्वजारोहण किया गया। तत्पश्चात सामूहिक रूप से राष्ट्रगान का संगान किया।

इस अवसर पर उपस्थित सभी अतिथियों ने राष्ट्र भक्ति, पर्यावरण संरक्षण, स्वस्थता, कोरोना से बचाव, नैतिक मूल्यों के संवर्द्धन के प्रति जागरूक होकर आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करते हुए संकल्प दिलाया। संस्था के देवेंद्र आचार्य ने स्वागत एवं आभार गणेश कच्छारा ने व्यक्त किया।

चित्रकला व कविता प्रतियोगिता

तारानगर।

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में शासनश्री साध्वी प्रसमरति जी के सान्निध्य में चित्रकला प्रतियोगिता व कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें सभी बच्चों से भारतीय राष्ट्रध्वज का चित्र बनवाया गया और सभी बच्चों ने देशभक्ति की कविताएँ सुनाई। बच्चों को चित्रकला प्रतियोगिता में चित्र बनाने के लिए किट ओमप्रकाश सरावगी, तारानगर द्वारा प्रदान की गई।

प्रतियोगिता का परिणाम आगामी कार्यक्रम में घोषित किया जाएगा तथा विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार दिया जाएगा। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, तारानगर के अध्यक्ष राजेंद्र बोथरा, मंत्री मांगीलाल बरमेचा के साथ मनीष बोथरा, हितेश सुराणा, हर्षिता बोथरा, दीप्ति बोथरा, विकास सुराणा मौजूद थे। साध्वीश्री के मंगलपाठ व राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम समापन हुआ।

शपथ ग्रहण समारोह

रायपुर।

मुनि दीपकुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ किशोर मंडल का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। मुनिश्री ने किशोरों के प्रति मंगलकामनाएँ व्यक्त की। किशोर मंडल प्रभारी अर्पित गोखरू द्वारा संचालन के साथ ही नव कार्यसमिति की घोषणा की गई। निवर्तमान संयोजक सम्यक् डागा द्वारा नव संयोजक यश डूंगरवाल व सदस्यों को शपथ दिलाई गई। तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र डागा ने अपने विचार व्यक्त किए।

मासखमण तप अभिनंदन

विल्लुपुरम।

साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी के सान्निध्य में संगीता ए० बाफणा के मासखमण का प्रत्याख्यान एवं तप अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। चातुर्मास प्रारंभ होने से पूर्व ही यहाँ तपस्या की झड़ी लग गई थी। कई भाई-बहनों की पंचोला, अठाई, नौ आदि की तपस्या पूर्ण हो चुकी है। और कई के तपस्या का क्रम प्रवर्धमान है। एकांतर, एकासन, बारी के उपवास का सुंदर क्रम चल रहा है। साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी ने कहा कि तप कषाय मुक्ति एवं आत्म शुद्धि का अभियान है। तपस्या के ताप से कर्म शिलाएँ पिघलने लगती हैं।

साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने कहा कि आत्मा ज्योति और तप की ज्योति, श्रद्धा के बल पर जागृत होती है। श्रद्धा बल एक ऐसा बल है जिससे व्यक्ति अचिंत्य लाभ प्राप्त कर लेता है। साध्वी प्रबोधयशा जी ने कहा कि तपस्वी आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ की नींव तप और त्याग से रखी है।

कार्यक्रम का मंगलाचरण के द्वारा शुभारंभ किया कन्या मंडल की कन्याओं ने। स्थानीय सभा, तेयुप एवं महिला मंडल से महेंद्र धोखा, विशाल सुराणा एवं राखी सुराणा ने अपने भाव गीतिका एवं विचारों द्वारा व्यक्त किए। महिला मंडल की अध्यक्षा ने तपस्वी की अनुमोदना हेतु संपूर्ण विल्लुपुरम तेरापंथ समाज की ओर से छोटे-छोटे त्याग रूपी भेंट तपस्वी को प्रदान किए। राजेश सुराणा ने असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी द्वारा प्रदत्त मंगल संदेश का वाचन किया। मूर्तिपूजक संघ के राजेंद्र नाहर, स्थानकवासी संप्रदाय से रिकबचंद बंब एवं प्रवीण दुगड़ ने अपने विचार एवं गीतिका प्रस्तुत किए। पारिवारिक अनुमोदना के क्रम में दोहित्रीद्वय कृषि व कृति गादिया, प्रतिभा झाबक, यशोमती संचेती, संगीता बाफना, दिशा बाफणा, महिमा बरड़िया और उपासक पदम आंचलिया ने अपने विचार गीतिका एवं कविता द्वारा प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सन्मतिप्रभा जी द्वारा किया गया।

शपथ ग्रहण समारोह

भुज।

तेरापंथ भवन में एक साथ ऐतिहासिक ४ संघीय संस्थाओं का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। नमस्कार महामंत्र के सामुहिक उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। महासभा की ओर से शांतिलाल जैन ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन कर संकल्प करवाए। सभाध्यक्ष हसमुखभाई मेहता ने अपने विचार व्यक्त किए एवं नवनियुक्त टीम को बधाई प्रेषित की। अणुव्रत समिति के निवर्तमान अध्यक्ष वाडीलाल मेहता ने सभी पदाधिकारी को शुभकामनाएँ प्रेषित की। अभातेयुप समिति सदस्य आदर्श संघवी ने अपने भाव व्यक्त किए। महिला मंडल की नवनिर्वाचित अध्यक्षा जयश्री बेन खंडोल ने निर्विरोध अध्यक्ष बनाने हेतु समस्त नारी शक्ति का आभार प्रकट किया। तेयुप के नवनिर्वाचित अध्यक्ष आशीष बाबरिया ने अपना उद्बोधन दिया।

महिला मंडल निवर्तमान अध्यक्षा भारती बहन शाह ने नवनिर्वाचित अध्यक्षा जयश्री बहन खंडोल को शपथ दिलाई तत्पश्चात जयश्री बहन ने संपूर्ण महिला मंडल कार्यकारिणी को शपथ दिलवाई। कन्या मंडल की नवनियुक्त संयोजिका टिया बाबरिया और सह-संयोजिका कृषि मेहता, ध्रुवी बाबरिया को महिला मंडल मंत्री अस्मिता बाबरिया ने शपथ दिलवाई।

तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष भरत बी० मेहता ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष आशीष बाबरिया को शपथ ग्रहण करवाए। तत्पश्चात आशीष ने टीम तेयुप को शपथ के साथ संकल्प दिलवाए। तेरापंथ किशोर मंडल संयोजक यश दोशी और सह-संयोजक देवांश दोशी एवं वैभव गांधी मेहता को शपथ तेयुप मंत्री महेश गांधी ने दिलवाई। अभार ज्ञापन तेयुप सहमंत्री भावित मेहता ने किया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री महेश गांधी ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह

ईरोड।

मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। मुनि अर्हत् कुमार जी ने आशीर्वाद स्वरूप प्रेरणा दी। मुनि भरत कुमार जी, मुनि जयदीप जी ने मंगलकामनाएँ प्रेषित की।

मदुराई तेरापंथ सभा अध्यक्ष जयंतिलाल जीरावला, उपासक नैनमल कोठारी, तेममं, तेयुप सभी ने तेयुप, ईरोड की सेवा की सराहना करते हुए बधाई दी। नव निर्वाचित अध्यक्ष सुभाष बैद ने अपनी नई कार्यकारिणी टीम को शपथ दिलाई।

भिक्षु भजन संध्या

कांकरोली।

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु को बोधि राजनगर ग्राम में प्राप्त हुई थी और तेरस के शुभ दिन प्राप्त हुई थी, उस तेरस का दिन सुदी तेरस के रूप में तेयुप कांकरोली ने प्रज्ञा विहार में शतावधानी मुनि संजय कुमार जी स्वामी, मुनि प्रकाश कुमार जी स्वामी, मुनि सिद्धप्रज्ञ जी स्वामी के सान्निध्य में भजनों का संगान कर भिक्षु भजन मंडली ने भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की।

महिला मंडल के विविध आयोजन

शपथ ग्रहण समारोह

इचलकरंजी।

आचार्य भिक्षु जन्मोत्सव व बोधि दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल की नवगठित कार्यकारिणी का शपथ समारोह साध्वीप्रज्ञाश्री जी आदि के सान्निध्य में आयोजित किया गया। निवर्तमान अध्यक्ष सीमा डागा ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष जयश्री जोगड़, मंत्री प्रज्ञा आंचलिया सहित उनकी पूरी टीम को शपथ दिलवाई एवं दायित्व हस्तांतरित किया। साध्वीश्री जी ने नई टीम के प्रति मंगलकामनाएँ प्रेषित की।

पौधारोपण कार्यक्रम

जयपुर-शहर।

अगस्त क्रांति दिवस के उपलक्ष्य में राजस्थान खादी ग्रामोद्योग संस्थान संघ द्वारा संरक्षित गांधी वन में तेरापंथ महिला मंडल व कन्या मंडल द्वारा पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम स्थल पर अभातेममं की कार्यकारिणी सदस्य गुलाब बोथरा, महिला मंडल की अध्यक्ष निर्मला सुराणा, मंत्री पायल बैद, महिला मंडल सदस्य नेहा नागोरी, उषा बरड़िया, सुमन कोठारी सहित अन्य कई सदस्यों की उपस्थिति रही।

इस अवसर पर गांधी लोक दर्शन के अध्यक्ष गिरधारी लाल बाफना, राजस्थान खादी ग्रामोद्योग संस्था संघ बजाज नगर, जयपुर व विनय भारती बाल मंदिर स्कूल के मंत्री जवाहरलाल सेठिया, संस्था के कार्यकर्ता उपस्थित रहे। सभी ने गांधी म्यूजियम का अवलोकन भी किया।

तत्त्वबोध कार्यशाला

साहुकारपेट, चेन्नई।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में महिला मंडल के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन में 'पाए अवबोध सीखें तत्त्वबोध' पर कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि तत्त्वज्ञान आत्मा का बोध कराने वाला दिशादर्शन है। आत्मज्ञान पाने की महत्त्वपूर्ण दिशा तत्त्वबोध है, इससे वैराग्य बढ़ता है, चरित्र में निर्मलता आती है। बहनों को तत्त्वज्ञान व तेरापंथ दर्शन की परीक्षा से जुड़ना चाहिए। परीक्षा एक माध्यम है स्वाध्याय करने का।

साध्वीवृंद ने गीतिका के संगान के माध्यम से तत्त्वज्ञान से जुड़ने की प्रेरणा दी। साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा कि वीतरागता का सशक्त सोपान है–तत्त्वज्ञान। तेरापंथ दर्शन, तत्त्वज्ञान, तेरापंथ दर्शन की परीक्षा में सभी वर्ग के लोग ज्यादा-से-ज्यादा इस परीक्षा से जुड़ें।

दूसरे चरण में अभातेममं के निर्देशानुसार आयोजित होने वाली तत्त्वज्ञान, तेरापंथ दर्शन की परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाली परीक्षार्थी बहनों को प्रमाण पत्र एवं मोमेंटो द्वारा सम्मानित किया गया। अध्यक्ष पुष्पा हिरण ने अपने विचार व्यक्त किए। तुलसी शिक्षा परियोजना के कार्यक्रम की संयोजिका पुष्पा हिरण एवं सह-संयोजिका प्रीति डूंगरवाल एवं केंद्र द्वारा नियुक्त प्रशिक्षिका दीपाली सेठिया का सभी सम्मान किया गया। संयुक्त रूप से संचालन प्रीति डूंगरवाल एवं रीमा सिंघवी ने किया।

इस अवसर पर कनक कला कौशल प्रतियोगिता के विजेताओं, संयोजिका एवं निर्णायकों का भी मोमेंटो एवं साहित्य के द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर तेममं के पदाधिकारी एवं कार्यसमिति सदस्यों के साथ तेरापंथ सभाध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया एवं समाज के गणमान्य व्यक्तियों की विशेष उपस्थिति रही।

साध्वीप्रमुखाश्री जन्मदिवस समारोह

मदुरै।

तेरापंथ भवन में मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी का ८१वाँ जन्म दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल द्वारा प्रेरणा गीत के द्वारा हुई। अध्यक्ष नयना पारख ने सभी का स्वागत किया।

मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ का सौभाग्य है कि हमें गड़ी-गड़ाई, पढ़ी-पढ़ाई, मंजी-मंजाई साध्वीप्रमुखाश्री जी मिले हैं। एक घर में ३ बहुओं को संभालना मुश्किल हो जाता है तो संघ लगभग साढ़े पाँच सौ साध्वियों को संभालना विलक्षण व्यक्तित्व की मिसाल है। मुनि भरत कुमार जी ने तेरापंथ संघ की गौरवशाली साध्वीप्रमुखाश्री जी के जीवन एवं उनके गुणों के बारे में बताया।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष जयंतीलाल जीरावला ने अपने भाव व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने साध्वीप्रमुखाश्री जी के व्यक्तित्व एवं उनके गुणों के बारे में प्रस्तुति दी। धन्यवाद ज्ञापन मंच संयोजन मंत्री दीपिका फूलफगर ने किया।

जन्मदिवस अभिवंदना समारोह

मैसूर।

तेरापंथ भवन में तेरापंथ सभा द्वारा आयोजित अभिवंदना समारोह में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि तेरापंथ संघ में साध्वीप्रमुखाश्री की व्यवस्था जयाचार्य की दूरदर्शिता का परिचायक है। वर्तमान में साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी आठवीं साध्वीप्रमुखा हैं। प्रारंभ से ही प्रतिभा संपन्न रही हैं। आचार्य तुलसी ने कोहिनूर हीरे के रूप में तेरापंथ संघ को साध्वीप्रमुखा प्रदान कर साध्वी समाज पर विशेष अनुग्रह किया।

साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। साध्वी सिद्धियशा जी ने अभ्यर्थना के स्वर अर्पित करते हुए कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री जी का अमाप्य समर्पण और संकल्प बल हमारे लिए प्रेरक है। तेममं ने गीत का संगान कर वातावरण को महाश्रमणीमय बना दिया। महिला मंडल अध्यक्षा मंजु दक ने श्रद्धा भाव प्रस्तुत किए।

कन्हैयालाल देरसारिया ने साध्वीप्रमुखाश्री जी को तेरापंथ का भाग्योदय बताते हुए चिर निरामयता की कामना की। ज्ञानशाला के बच्चों ने कार्यक्रम की मोहक प्रस्तुति से साध्वीप्रमुखा जी की वर्धापना की। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी सिद्धियशा जी, साध्वी राजुलप्रभा जी, साध्वी चेतन्यप्रभा जी एवं साध्वी शौर्यप्रभा जी ने साध्वी मंगलप्रज्ञा जी द्वारा रचित गीत का सामुहिक संगान किया। कार्यक्रम की संचालिका साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभा जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री जी के रिद्धि-सिद्धि एवं समाधि की त्रिपथगा है।

दायित्व बोध कार्यशाला

मुंबई।

तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में 'दायित्व बोध जगाएँ आत्मबोध पाएँ' नवसंबोध घाटकोपर तेरापंथ भवन में घाटकोपर महिला मंडल द्वारा आयोजित किया गया। कार्यशाला की शुरुआत समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी के नवकार महामंत्र से हुई। तत्पश्चात महिला मंडल द्वारा सुमधुर गीत से मंगलाचरण किया। घाटकोपर संयोजिका मंजु कुमठ ने सभी बहनों का स्वागत-अभिनंदन किया।

आओ मिलकर कदम बढ़ाएँ शुभ संकल्प करना है। तेममं एवं कन्या मंडल ने कव्वाली के माध्यम से सभी के प्रति दायित्व बोध कराया। नवनिर्वाचित मुंबई महिला मंडल की अध्यक्ष रचना हिरण ने पूरे मुंबई को ६ प्रकोष्ठ में करते हुए सभी को दायित्व दिया। साथ ही २०२३ में गुरुदेव पधारेंगे तब हमें किस तरह से अपने दायित्व को निभाते हुए अग्रसर होना है उसका दायित्व बोध कराया।

तेरापंथ कन्या मंडल ने अपने दायित्व को बताते हुए एक शब्दचित्र प्रस्तुत किया। निवर्तमान अभातेममं राष्ट्रीय अध्यक्ष कुमुद कच्छारा ने बताया कि दायित्व क्या है, कैसे करना चाहिए इस पर जानकारी देते हुए कोर टीम के कार्य की जानकारी दी।

समणी सुमनप्रज्ञा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। गीत के रचनाकार समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी हैं। समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी ने कहा कि सभी बहनों को अपने कार्यकाल को डायमंड की तरह बनाना है और कार्य अच्छा करना होगा। पूर्वाध्यक्ष प्रेमलता सिसोदिया ने संविधान व कुछ नियमों पर प्रकाश डाला। कार्यशाला का संचालन मुंबई महिला मंडल मंत्री अलका मेहता ने व आभार ज्ञापन कार्यकारिणी सदस्य रमीला बड़ाला ने किया। कार्यक्रम में मुंबई पूर्वाध्यक्ष कांता तातेड़, मीना सुराणा, मंजु छाजेड़, जयश्री बड़ाला, मुंबई निवर्तमान अध्यक्ष भाग्यश्री कच्छारा, संयोजिका किंजल संचेती, सह-संयोजिका जिज्ञासा सिसोदिया, काजल एवं समस्त कार्यकारिणी की बहनों सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की गरिमापूर्ण उपस्थिति रही।

कार्यक्रम को सफल बनाने में घाटकोपर महिला मंडल संयोजिका मंजु कुमठ एवं उनकी संपूर्ण टीम एवं सारिका बाफना, स्वाति सोनी, ममता दोषी, श्रुति गोखरू का सहयोग रहा।

युवती जागरण शिविर

नोहर, हनुमानगढ़।

स्थानीय तेरापंथ सभा भवन में महिला मंडल के तत्त्वावधान में आयोजित दो दिवसीय युवती प्रशिक्षण शिविर में मुनि विजय कुमार जी ने श्रावक-श्राविकाओं को जैन रामायण का रसपान कराते हुए उपस्थित युवतियों से कहा–यह दो दिवसीय शिविर एक विशेष उद्देश्य से रखा गया है। व्याख्यान श्रवण का सौभाग्य ज्यादातर सासुओं एवं वृद्ध माताओं को मिलता है, युवतियाँ प्रायः वंचित रह जाती हैं। यह दो दिनों का अवसर विशेष रूप से युवती बहुओं के लिए रखा गया है। आज की युवतियाँ ज्यादातर पढ़ी-लिखी होती हैं, घर की बहुत सारी जिम्मेवारियाँ सहज रूप से उन पर आ जाती है, भाई लोग उनके कारण अनेक कार्यों में निश्चिंत रहते हैं। युवतियों को यह भी सोचना चाहिए कि धार्मिक संस्कारों की अमूल्य विरासत जो उन्हें अपने माता-पिता या सास-ससुर से मिली है, उसे सुरक्षित रखना भी उनकी अहम जिम्मेवारी है। बच्चे को जन्म देकर आप जन्मदात्री माँ बन जाती हैं किंतु इससे भी आगे जीवनदात्री माँ भी आपको बनना है। युवती बहुएँ जीवनदात्री माँ की भूमिका को निभाएँ और पूरे परिवार में संस्कारों की सुवास फैलाएँ।

दूसरे दिन शासनश्री मुनिश्री ने कहा कि जीवन में कई प्रकार की उपलब्धियाँ बताई जा सकती हैं, किंतु चित्त समाधि एवं मानसिक शांति से बढ़कर कोई महत्त्वपूर्ण उपलब्धि नहीं है। आप सामुहिक जीवन जीते हैं, सबके लिए विचार, सोचने का ढंग एक सरीखा नहीं होता, ऐसे में वैचारिक आग्रह असमाधि का बहुत बड़ा कारण बन सकता है। इसलिए दूसरे के विचारों को समझने की कोशिश करें। एक छोटी-सी बात असहिष्णुता के कारण परस्पर तलाक का रूप ले लेती है। सुख से रहना, तो सीखो एक-दूसरे को सहना, इस वाक्य को सामने रखकर चलो, बहुत सारी समस्याएँ स्वतः शांत हो जाएँगी।

शिविर में प्रतिदिन तीन सत्र चलते थे। प्रातःकालीन योगासन की कक्षा, मुनिश्री का सामायिक विषयों पर उद्बोधन, साधिका सुशीला बांठिया कायोत्सर्ग की कक्षा लेती थी। प्रज्ञा प्रस्तुति एवं प्रश्न मंच परीक्षा का कार्यक्रम चला। प्रो० भारती छाजेड़ ने स्वास्थ्य के विषय पर अपने विचार प्रकट किए। प्रज्ञा प्रस्तुति कार्यक्रम में प्रथम स्थान प्राप्त राधा सिपानी, द्वितीय स्थान प्राप्त प्रेम कोठारी, तृतीय स्थान प्राप्त विनीता छाजेड़ ने अपनी प्रस्तुतियाँ दी। महिला मंडल ने पुरस्कार देकर उन्हें प्रोत्साहित किया। मंगलाचरण युवती बहनों ने किया। सरला देवी सिपानी, यशिता व आँचल ने भी अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। मुनिश्री के नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से शिविर प्रारंभ हुआ, उन्होंने युवतियों को लक्ष्य करके गीतिका की प्रस्तुति भी दी। महिला मंडल प्रधान किरण देवी छाजेड़ ने संयोजन किया।

विशेष कार्यशाला का आयोजन

पर्वत पाटिया।

डॉ० समणी ज्योतिप्रज्ञा जी एवं समणी मानसप्रज्ञा जी के सान्निध्य में एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ० समणी ज्योतिप्रज्ञा जी ने कहा कि वनस्पतिकाय हमारे बगैर जी सकती है पर हमारा जीवन इनके बिना नहीं चल सकता। वनस्पतिकाय का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है, बताया एवं कर्मवाद पर वनस्पतिकाय का सुंदर विश्लेषण प्रोजेक्टर पर पीपीटी द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मुंबई भाजपा के उपाध्यक्ष राज के० पुरोहित, स्थानीय पार्षद दिनेश पुरोहित, बजरंग आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। राज के० पुरोहित ने अपना वक्तव्य दिया।

स्थानीय पार्षद दिनेश राजपुरोहित ने अपने विचार व्यक्त किए। स्थानीय सभा द्वारा आगंतुक अतिथियों का साहित्य एवं शॉल द्वारा सम्मान किया गया।

✦ जब क्षयोपशम की स्थिति बनती है, तब संयम की भावना बनती है और वह उस दिशा में पादन्यास करता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

ध्यान की भूमिका

सत्य अहिंसा ब्रह्मव्रत, विमल अचौर्य उदार।
अपरिग्रह की भावना, हो निश्छल व्यवहार।।
अणुव्रत के आदर्श में व्यसन-मुक्ति अनिवार्य।
सात्त्विक चर्या सहजता, कोमलता औदार्य।
अहंकार ममकार भी जब हो जाए चूर्ण।
पूर्व-भूमिका ध्यान की, तब हो जाए पूर्ण।।

प्रश्न : अस्तित्व की जिज्ञासा ध्यान-साधना का आदि-बिंदु है, क्या इस जिज्ञासा का समाधान ही पर्याप्त है या ध्यान की विभिन्न भूमिकाओं में प्रवेश पाने के लिए और भी कोई साधना जरूरी है?

उत्तर : ध्यान के लिए सबसे अधिक आवश्यक तत्त्व है चित्त की निर्मलता। व्रतों की साधना के बिना चैतसिक निर्मलता अधिगत नहीं हो सकती। व्रतों की दो भूमिकाएँ हैं–महाव्रत और अणुव्रत। व्रत अपने-आपमें महान ही होता है। वह महान और अणु के भेद से विभक्त नहीं होता। पर व्रत की अनुपालना करने वाले व्यक्ति की क्षमता के आधार पर वह भी विभाजित हो जाता है। मुख्य रूप से व्रतों के पाँच भेद हैं–अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। अहिंसा की साधना का अर्थ है राग और द्वेष की मुक्ति का क्षण। अहिंसा का फलित है समग्र विश्व के साथ मैत्री का अनुभव। राग-द्वेष की मुक्ति से वीतरागता की ओर प्रयाण होता है और मैत्री की भावना से विश्वात्मा के साथ तादात्म्य की अनुभूति बढ़ती है। वीतरागता की भावना और मैत्री-भावना से चित्त की निर्मलता जितनी बढ़ती है, ध्यान की स्थिति भी उतनी सुदृढ़ होती जाती है।

सत्य ऋजुता का प्रतीक है। जो साधक ऋजु होता है, वह मलों का संचय नहीं करता। असत्य-भाषण से चित्त कलुषित होता है। असत्य बोलने वाला भयभीत रहता है। संभावित अनिष्ट से अपना बचाव करने के लिए वह माया का जाल बिछाता है। जब उसकी माया का पता लग जाता है, तब वह उत्तेजित हो उठता है। उत्तेजना से वैर बढ़ता है और व्यक्ति का अपयश होता है। भय, क्रोध और माया को असत्य से अलग नहीं किया जा सकता। ये सब वृत्तियाँ जहाँ पुष्ट रहती हैं, वहाँ चित्त की निर्मलता संभव नहीं है। निर्मलता के अभाव में ध्यान का बीज अंकुरित नहीं हो सकता।

तीसरा व्रत है–अस्तेय। स्तेय का अर्थ है–चोरी। चोरी असंयम की परिणति है। चोरी करने वाला दूसरों के स्वत्व का अपहरण करता है। यह एक प्रकार का क्रूर कर्म है। इसमें संलग्न व्यक्ति कभी आत्मस्थ नहीं हो सकता। उसकी दृष्टि पदार्थपरक रहती है। पदार्थ-जगत में जीने वाला व्यक्ति चित्त की निर्मलता के बारे में सोच ही नहीं सकता। अस्तेय व्रत का आराधक पदार्थ-जगत से विरत हो जाता है, अतः वह चैतसिक निर्मलता की दिशा में गति कर लेता है।

चौथा व्रत है–ब्रह्मचर्य। ब्रह्मचर्य आत्मानुभूति की साधना है। यह शक्ति का अक्षय स्रोत है। यह एक प्रकार का विशिष्ट तप है। इसकी साधना करने वाला साधक शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की शक्तियों को सुरक्षित रखता हुआ तेजस्वी बन जाता है। ब्रह्मचर्य का साधक अपनी वृत्तियों को उच्छृंखल नहीं होने देता। इसके विपरीत अब्रह्मचर्य वासना को उच्छृंखल बनाता है और आत्मोन्मुखता के मार्ग में बाधा उपस्थित करता है। आत्मानुभूति और शक्ति-संरक्षण इन दृष्टियों से ब्रह्मचर्य की साधना ध्यान साधना की पृष्ठभूमि में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है।

पाँचवाँ व्रत है–अपरिग्रह। अपरिग्रह का फलित है–अमूर्च्छा। मूर्च्छा आसक्ति है। आसक्त चित्त अंतुर्मखी नहीं बन सकता। शरीर और पदार्थ दोनों के प्रति उसका ममत्व रहता है। ममत्व की परतें जितनी सघन होती हैं, निर्मलता पर उतना ही सघन आवरण रहता है। उन परतों को तोड़ने के लिए अपरिग्रह व्रत की भावना का अभ्यास करना जरूरी है।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह–ये चित्त की निर्मलता के साधन हैं, इसलिए इन्हें मूल गुण कहा जाता है। इनकी सुदृढ़ता के आधार पर ही ध्यान का विकास हो सकता है। जिस व्यक्ति का व्यवहार निश्छल नहीं होता, वह ध्यान का अधिकारी नहीं हो सकता। महाव्रत या अणुव्रत की साधना के बिना व्यवहार निश्छल नहीं हो सकता। हिंसा, असत्य, चोरी, काम और परिग्रह–ये सब छलना को बढ़ाने वाले हैं। छलना की सिद्धि में ध्यान की भूमिका प्रशस्त नहीं हो सकती, इसलिए एक ध्यान-साधना के जीवन में व्रतों की आराधना का भी अपना मूल्य है।

प्रश्न : आध्यात्मिक वातावरण में रहने पर भी व्यक्ति के मन में हिंसा, असत्य आदि दुष्प्रवृत्तियों का आकर्षण क्यों रहता है? कई साधक चाहने पर भी इन वृत्तियों से मुक्त नहीं हो पाते, इसका क्या कारण है?

उत्तर : असत् वृत्ति का सबसे बड़ा कारण है–संस्कार। संस्कार के साथ चिरकालीन अभ्यास उस वृत्ति को पुष्ट कर देता है। संस्कार और अभ्यास के योग से व्यक्ति हिंसा की ओर उन्मुख होता है। संस्कारों का विपाक होने पर वे उदीर्ण होते हैं। इसमें निमित्त कारण बहुत काम करते हैं। केवल कर्म से हिंसा नहीं होती। निमित्तों की प्रबलता से मनोवृत्ति हिंसक बनती है। जिस देश और काल में हिंसा के उद्दीपन कारण प्रबल होते हैं, वहाँ हिंसा को अधिक प्रोत्साहन मिलता है। उत्तेजक कारण कम होते हैं तो कर्मों का विपाक भी कम होता है। यौगलिक युग में हिंसा, असत्य आदि को उभारने वाले कारण नहीं के बराबर थे, इसलिए मनुष्य की वृत्तियाँ भी इतनी कलुषित नहीं होती थीं। वर्तमान परिस्थितियों में सुबह से शाम तक हिंसा का उद्दीपन वातावरण है। समाचार-पत्रों में चोरी, डकैती, मारकाट और बलात्कार के संवाद पढ़ने को मिलते हैं। ऐसी ही घटनाएँ लोग देखते और सुनते हैं। ये बाह्य कारण हैं। शरीर को प्राप्त होने वाला भोजन, शरीर के रासायनिक स्राव आदि आंतरिक कारणों में भी असत् का प्रभाव रहता है। साधक जब बाह्य और आंतरिक दोनों ओर के असत् प्रभावों से मुक्त होने का प्रयत्न करेगा, तभी वह अपनी वृत्तियों का उदात्तीकरण करने में सफल हो सकता है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(११)

आज का यह प्रात है अवदात कितना।
गगन की पुलकन धरा पर उतर आई।।

जानते सब तुम जगत में हो अनूठे
नहीं कोई इस तुला में आ सका है
बाँटते मधुकोष अक्षय और अनुपम
थाह बोलो कौन उसकी पा सका है
विश्व के इतिहास में अंकित हुए तुम
त्रस्त मानव के तुम्हीं हो एक त्रायी।।

घाटियाँ वीरान-सी जो लग रही थीं
आ गए सहसा वहाँ तुम ले बहारें
फूल-सी मुस्कान तुमने ही बिखेरी
जहाँ काँटों से भरे थे पंथ सारे
जिंदगी तम से घिरी जब आदमी की
चेतना आलोक की तुमने जगाई।।

दो नया संदेश तुम हमको सृजन का
स्वप्न को कर सत्य हम युग को दिखाएँ
खिल रहा सारा गुलिस्ताँ देख तुमको
प्राण का पंछी अचानक गुनगुनाए
शांति का निर्झर तुम्हारे पास बहता
बूँद बनकर मैं स्वयं उसमें समाई।।

एक लंगर और तुमने आज डाली
अब नहीं तूफान भी कुछ कर सकेगा
नाव जीवन की सहज बढ़ती रहेगी
नहीं मन-मांझी कभी भी डर सकेगा
तैर सकते हो समंदर तुम भुजा से
मचलती लहरें तुम्हें देती बधाई।।

(१२)

जन-जन के मानस-मंदिर में थिरक रहा अभिनव उल्लास।
सफर सुहाना अर्द्धसदी का दिग् दिगन्त में सुयश-सुवास।।

जन-हित में अर्पित है जीवन दिखलाई अणुव्रत की राह
अलख जगाई नैतिकता की कल्पवृक्ष की ठंडी छाँह
हर इन्सां इन्सान बने यह पलती है पलकों में चाह
स्नेहिल नजरों के जादू से दूर भगाते दिल की दाह
बाँटो इमरत अंजुरियाँ भर बुझ जाए इस युग की प्यास।।

समता के उत्तुंग शिखर पर चरण तुम्हारे हैं गतिशील
ज्योतिर्मय कर देती सबको उजली ज्ञानमयी कंदील
प्रेरक सन्निधि यह मंगलमय है निदाघ में शीतल झील
सम्मोहन अद्भुत बिखेरती जीवन की अलबेली रील
चिर अनंत रमणीय! तुम्हारा उपशम-मंडित हर उच्छ्वास।।

दिल है इक दरिया करुणा का नहीं कहीं है उसका छोर
देख तुम्हारा धैर्य विलक्षण उठती मन में नई हिलोर
रजत-रश्मियों के रथ पर आ अर्चा करता रवि हर भोर
देख तुम्हारी छवि कुदरत का कण-कण पुलकित कांत किशोर
भक्ति-शक्ति की इस धरती पर रचा देव! तुमने इतिहास।।

(क्रमशः)

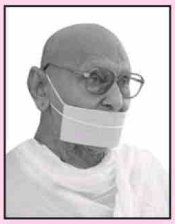

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

क्रिया-अक्रियावाद

(२३) आगारमावसंल्लोकः, सर्वप्राणेषु संयतः।
समतां सुव्रतो गच्छन्, स्वर्गं गच्छति नाऽमृतम्।।

घर में निवास करने वाला व्यक्ति सब प्राणियों के प्रति स्थूल रूप से संयत होता है। जो सुव्रत है और समभाव की आराधना करता है, वह स्वर्ग को प्राप्त होता है, किंतु हिंसा और परिग्रह के बंधन से सर्वथा मुक्त न होने के कारण वह मोक्ष को नहीं पा सकता।

जीवों की विविध योनियाँ हैं। उसमें मानव-जीवन सर्वश्रेष्ठ है। समस्त अध्यात्मद्रष्टा संतों ने एक स्वर से इस सत्य को स्वीकार किया है। मानवीय जीवन से नीचे स्तर के प्राणियों में विवेक की मात्रा इतनी विकसित नहीं है जितनी कि मनुष्य में। मनुष्य-जीवन द्वार है जिससे वह नीचे और ऊपर दोनों तरफ गति कर सकता है। नीचे और ऊपर जाने का स्वातंत्र्य भी उसके हाथ में है। निर्णय यह करना है कि जाना कहाँ है? अनेक व्यक्ति जीवन की परिसमाप्ति तक निर्णय नहीं कर पाते। ये सरिता के प्रवाह में लुढ़कते हुए पत्थरों की तरह हैं। कर्म के प्रवाह में प्रवाहित होते हुए आए और वैसे ही चले गए। किंतु जीवन उन्हीं के लिए है जो ऊपर उठने का निर्णय लेते हैं और उस दिशा में अनवरत गतिशील रहते हैं।

मूल स्थिति मनुष्य जीवन है। मानव देह से पुनः मानव देह धारण करना, यह भी इतना सहज नहीं है। इसका सौभाग्य भी किसी-किसी को उपलब्ध होता है। अनेक लोग हैं और उनकी जीवन-पद्धतियाँ–संस्कार भी पृथक्-पृथक् हैं। सत्य क्या है? अनेक लोगों से यह अविज्ञात है, तब फिर उसके साक्षात्कार की कल्पना तो कर ही नहीं सकते। आगम कहते हैं–मूल स्थिति उनके लिए पुनःशक्य है–जो सरल, विनम्र, शांत और निश्छल व्यवहार युक्त हैं। मूल-स्थिति से उत्थान का क्रम है–इंद्रियों और मन का प्रत्याहार करना। उनके बहिर्गामी दौड़ को अंतर्गामी बनाना। मन को बिना एकाग्र किए और उसके स्वरूप से परिचित हुए बिना उसका नियमन कठिनतम है। संयत मन और संयत इंद्रियाँ आत्म-दर्शन का द्वार उद्घाटित करती हैं। इनके द्वारा क्रमशः आरोहण के सोपानों का अतिक्रमण करते हुए व्यक्ति उच्च, उच्चतर और उच्चतम अवस्थिति को पा लेता है।

(२४) दुःखावह इहाऽमुत्र, धनादीनां परिग्रहः।
मुमुक्षुः स्वं दिदृक्षुश्च को विद्वान् गृहमावसेत्।।

धन आदि पदार्थों का संग्रह इहलोक और परलोक में दुःखदायी होता है। अतः मुक्त होने की इच्छा रखने वाला और आत्म-साक्षात्कार की भावना रखने वाला कौन ऐसा विद्वान् व्यक्ति होगा जो घर में रहे?

गृहस्थ-जीवन क्लेशों से भरा है और संयम जीवन क्लेशों से मुक्त है। मनुष्य शांतिप्रिय है किंतु वह शांति का दर्शन संयम में न करके असंयम में करता है। असंयम शांति का द्वार नहीं, अशांति का द्वार है। जो शांतिप्रिय है उसे संयम प्रिय होना चाहिए। वस्तुतः जिसे शांति प्रिय है वह धन, पुत्र आदि में उसे नहीं देखता। वह उनसे संपृक्त रहता हुआ भी धायमाता की तरह उन्हें अपना नहीं मानता।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

(२) दर्शन (सम्यक्त्व) मार्ग

प्रश्न-१४ : सम्यक्त्वी में चारित्र कितने होते हैं?

उत्तर :	औपशमिक सम्यक्त्वी में	–	४, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, सूक्ष्म संपराय, यथाख्यात
	क्षायिक सम्यक्त्वी में	–	५, सभी
	क्षायोपशमिक सम्यक्त्वी में	–	३, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्धि
	सास्वादन सम्यक्त्वी में	–	चारित्र नहीं
	वेदक समयक्त्वी में	–	३, क्षायोपशमिक वत्

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

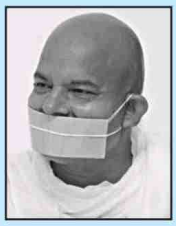

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

आचार्य स्थूलभद्र

आचार्य स्थूलभद्र ब्राह्मणपुत्र थे। उनका जन्म वी०नि० ११६ (वि०पू० ३५४) में पाटलिपुत्र में हुआ था। पाटलिपुत्र मगध की राजधानी थी। स्थूलभद्र के पिता का नाम शकडाल एवं माता का नाम लक्ष्मी था। शकडाल के नौ संतानें थी। स्थूलभद्र और श्रीयक दो पुत्र थे। यक्षा, यक्षदत्ता, भूता, भूतदिन्ना, सेणा, वेणा, रेणा–ये सात पुत्रियाँ थीं।

संसार-विरक्त अमात्य-पुत्र स्थूलभद्र के गतिशील चरण बढ़ते गए। आचार्य संभूतविजय के पास पहुँचकर स्थूलभद्र ने वी०नि० १४६ (वि०पू० ३२४) में दीक्षा ग्रहण की। मुनि जीवन में प्रवेश पाकर स्थूलभद्र सबके लिए वंदनीय बन गए। उस समय उनकी आयु तीस वर्ष की थी। आचार्य संभूतविजय की श्रमण-मंडली में स्थूलभद्र विनयवान्, गुणवान्, बुद्धिमान् श्रमण थे। उन्होंने संभूतविजय से आगम-साहित्य का गंभीर अध्ययन किया और मुनिचर्या का विशेष प्रशिक्षण पाया। धैर्य, स्थैर्य, क्षमा, शांति, समता आदि गुणों का विकास कर वे आचार्य संभूतविजय के अनंत विश्वासपात्र बने।

एक दिन विनयवान्, गुणवान् मुनि स्थूलभद्र ने पूर्वपरिचिता कोशा गणिका के भवन में पावस बिताने की इच्छा गुरु के समक्ष प्रकट की। आचार्य संभूतविजय ने 'तथास्तु' कहकर स्वीकृति दी। मुनि अपने संकल्पित लक्ष्य की ओर चल पड़े। स्थूलभद्र कोशा की उसी चित्रशाला में पहुँचे, जहाँ वे पहले बारह वर्ष रह चुके थे।

कोशा ने स्थूलभद्र का अभिनंदन किया। स्थूलभद्र ने कोशा से चित्रशाला में चतुर्मास बिताने के लिए आज्ञा माँगी। कोशा बोली–'प्राणदेव! आज आपके पधारने से मैं धन्य हो गई हूँ। यह चित्रशाला आपकी ही है। सहर्ष आप इसमें निवास करें।'

गणिका कोशा की आज्ञा से मुनि स्थूलभद्र का चित्रशाला में चातुर्मास प्रारंभ हुआ। लोगों की दृष्टि में जो कामस्थल था वह स्थूलभद्र के पदार्पण से धर्मस्थल बन बया।

कोशा स्थूलभद्र के लिए प्रतिदिन षट्रसयुक्त भोजन तैयार करती, बहुमूल्य आभूषणों से विभूषित होकर उनके सामने उपस्थित होती। विविध भाव-भंगिमाओं के साथ नृत्य करती। पूर्वभोगों की स्मृति कराती और वह यथासंभव उपाय से उन्हें मुग्ध करने का प्रयत्न करती।

स्थूलभद्र अपने व्रतों में हिमालय की भाँति अचल थे। उनके भीतर ब्रह्मचर्य का तेज चमक रहा था। कोशा के कामबाण विफल हो गए। वह स्थूलभद्र की संयम साधना के सामने झुकी और एक दिन नतमस्तक होकर कहने लगी–'मुने! मुझे धिक्कार है। मैंने आपको अपने व्रत से विचलित करने के लिए जो भी प्रयत्न किए हैं, उनके लिए आप क्षमा करें।'

स्थूलभद्र मुनि ने भी कोशा को धर्मोपदेश दिया। अध्यात्म का मर्म समझाया। कोशा भी जीवन-विज्ञान के रहस्य को समझकर व्रतधारिणी श्राविका बनी और विकल्प के साथ जीवन भर के लिए ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया।

पावस सानंद संपन्न हुआ। स्थूलभद्र कसौटी पर खरे उतरे। नवनीत आग पर चढ़कर भी नहीं पिघला। काजल की कोठरी में रहकर भी अतुल मनोबली मुनि स्थूलभद्र बेदाग रहे। वे आचार्य संभूतविजय के पास लौट आए।

आचार्य सात-आठ पैर स्थूलभद्र के सामने चलकर आए। 'दुष्कर-महादुष्कर क्रिया के साधक' का संबोधन देकर कामविजेता स्थूलभद्र का सम्मान किया।

द्वादश वर्षीय दुष्काल के कारण श्रुत की धारा छिन्न-भिन्न हो रही थी। उसे संकलित करने के लिए पाटलिपुत्र में महान् श्रमण-सम्मेलन हुआ। इस आयोजन के व्यवस्थापक स्थूलभद्र स्वयं थे। ग्यारह अंकों का सम्यक् संकलन हुआ। आगम-ज्ञान का विशाल भंडार 'दृष्टिवाद' किसी को याद नहीं था। दृष्टिवाद की अनुपलब्धि ने सबको चिंतित कर दिया। आचार्य स्थूलभद्र में असाधारण क्षमता थी। ज्ञानसागर की इस महान क्षति-पूर्ति के लिए संघ के निर्णयानुसार वे नेपाल में भद्रबाहु के पास विद्यार्थी बनकर रहे एवं उनसे समग्र चतुर्दश पूर्व की ज्ञान-राशि को अत्यंत धैर्य के साथ ग्रहण कर उन्होंने श्रुतसागर से टूटती दृष्टिवाद की सुविशाल धारा को संरक्षण दिया। अर्थ-वाचना दस पूर्व तक ही वे उनसे ले पाए थे। अंतिम चार पूर्व की उन्हें पाठ-वाचना मिली। वीर निर्वाण के १६० वर्ष के आसपास संपन्न यह सर्वप्रथम महत्त्वपूर्ण वाचना थी।

(क्रमशः)

✦ आस्तिक विचारधारा का आधार अध्यात्म है, जबकि नास्तिक विचारधारा भौतिकवाद से संपृक्त है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

स्वतंत्रता दिवस पर विविध आयोजन

स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण

भीलवाड़ा।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप ने ७५वें स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम एटीडीसी तेरापंथ नगर में आयोजित किया। कार्यक्रम में १२५ से ज्यादा सदस्य उपस्थित थे। चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष प्रकाश सुतरिया ने ध्वजारोहण किया। साथ में चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री निर्मल गोखरू भी मौजूद थे। ध्वजारोहण के बाद राष्ट्रगान का संगान किया।

तेयुप, भीलवाड़ा के अध्यक्ष संदीप चोरड़िया ने अपने विचार व्यक्त किए।

नि:शुल्क होम्योपैथी चिकित्सा शिविर

लिलुआ।

अभातेयुप के तीनों आयामों–सेवा, संस्कार, संगठन में कार्यरत तेयुप लिलुआ, हावड़ा द्वारा सामाजिक सेवा के क्षेत्र में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में नि:शुल्क होम्योपैथी चिकित्सा का शुभारंभ किया गया। सर्वप्रथम तेयुप के अध्यक्ष विकास पुगलिया ने नवकार महामंत्र उच्चारण के साथ कार्यक्रम को संबोधित किया। तत्पश्चात डॉ० असीम घोष को सेवा के लिए सम्मानित किया, इस सेवा से नि:शुल्क होम्योपैथी चिकित्सा लिलुआ, बेलूर बाली क्षेत्र में निवास कर रहे सभी सधर्मी तेरापंथी परिवार को तेयुप द्वारा २०२१-२२ होम्योपैथी चिकित्सा नि:शुल्क की व्यवस्था करवाई गई।

तेयुप के अध्यक्ष विकास पुगलिया, उपाध्यक्ष अमृत बाफना, मंत्री गौरव घोड़ावत, कोषाध्यक्ष अमित लुनिया, कार्यकारिणी सदस्य राहुल चोपड़ा एवं आशीष चौपड़ा ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

महाप्रज्ञ स्तंभ पर ध्वजारोहण

साउथ हावड़ा।

७५वें स्वतंत्रता दिवस पर तेयुप द्वारा ध्वजारोहण का कार्यक्रम महाप्रज्ञ स्तंभ फोरशोर रोड पर बड़े हर्षोल्लास से किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। तेयुप के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने उपस्थित सभी का स्वागत-अभिनंदन करते हुए अपना वक्तव्य दिया।

तेरापंथी सभा के ट्रस्टी अशोक कोठारी, मंत्री बसंत पटावरी, मीडिया प्रभारी मनोज बोहरा एवं अभातेयुप सदस्य सूर्य प्रकाश डागा ने झंडा फहराकर स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में अपने भाव रखे। उपस्थित सभी ने मिलकर राष्ट्रीय गान गाया। इस कार्यक्रम में ४० युवकों एवं किशोरों ने अपनी सहभागिता दर्ज करवाई। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री अमित बेगवानी ने किया एवं आभार ज्ञापन संयोजक विनीत लोढ़ा ने किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजक विनीत लोढ़ा, मनीष बैद, समित कुमार बैद, सह-संयोजक दीपक नखत एवं आदेश चोरड़िया का विशेष श्रम रहा।

ध्वजारोहण कार्यक्रम

वडोदरा।

साध्वी सम्यक्प्रभा जी के सान्निध्य में भारत के आजादी के ७५वर्ष पूर्ण होने पर तेरापंथ सभा, तेयुप, महिला मंडल, टीपीएफ, ज्ञानशालाएँ एवं समाज के सभी सदस्यों ने तेरापंथ भवन के प्रांगण में हिंदुस्तान का तिरंगा फहराया और शहीदों को नमन किया। ध्वजारोहण तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हस्तीमल मेहता ने फहराया।

इस अवसर पर सभा अध्यक्ष हस्तीमल मेहता, तेयुप अध्यक्ष पंकज बोल्या, महिला मंडल की अध्यक्षा गीता देवी श्रीमाल ने अपना वक्तव्य दिया। ज्ञानशाला के बच्चों ने देशभक्ति के गीतों पर नृत्य के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी।

साध्वी सम्यक्प्रभा जी ने अपने उद्बोधन में स्वतंत्रता सेनानियों को याद करते हुए स्वच्छता और अच्छे स्वास्थ्य का संदेश संप्रेषित कर स्वतंत्रता दिवस सही मायने में कैसे मनाना चाहिए, वो समझाया। कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ के अध्यक्ष राजेंद्र पारेख ने किया।

ज्ञानशाला द्वारा स्वतंत्रता दिवस का आयोजन

टिटिलागढ़।

ज्ञानशाला परिवार ने स्थानीय तेरापंथ भवन में ७५वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया। कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रीय गीत के संगान के साथ प्रारंभ हुई। तत्पश्चात ज्ञानशाला संयोजिका कृष्णा जैन ने सभी को स्वतंत्रता दिवस की बधाई देते हुए सभी का स्वागत किया। ज्ञानार्थी झिलमिल जैन भारत माता के भेष तथा ज्ञानार्थी सूर्यांश जैन ने देशभक्ति गीत पर अपना रोचक नृत्य प्रस्तुत किया।

रिद्धि जैन ने अपने वक्तव्य द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर देश के प्रति अपनी भक्ति को दर्शाया। सुंदरी जैन, स्नेहा जैन, सुभद्रा जैन ने गीत के द्वारा कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। मुख्य प्रशिक्षिका भावना जैन ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

स्वतंत्रता दिवस पर रक्तदान शिविर

बैंगलुरु।

अभातेयुप के मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के तहत तेयुप द्वारा भारत के ७५वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में यशवंतपुर स्थित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एंड डेंटल केयर में रक्तदान शिविर आयोजित किया।

शिविर का उद्घाटन संस्कारक विक्रम दुगड़ ने जैन संस्कार विधि द्वारा किया। मंत्रोच्चार के पश्चात मुख्य अतिथि मल्लेश्वरम के पूर्व पार्षद एन० जयपाल व बीजेपी मंडल के अध्यक्ष गौतमचंद मूथा व कार्यक्रम के प्रायोजक सरदारशहर परिषद से कमल सिंह सुमन पटावरी द्वारा फीता खोलकर विधिवत उद्घाटन किया। सभी का स्वागत तेयुप के अध्यक्ष विनय बैद ने किया।

मुख्य अतिथि अभातेयुप के एमबीडीडी कर्नाटक प्रभारी डॉ० आलोक छाजेड़, अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल व तेरापंथ सभा यशवंतपुर निवर्तमान अध्यक्ष प्रकाश बाबेल ने इस सेवा कार्य के प्रति शुभकामनाएँ प्रेषित की।

तेयुप एमबीडीडी प्रभारी सुधीर पोखरना व मंत्री प्रवीण बोहरा ने कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी। सभी का आभार एटीडीसी, यशवंतपुर संयोजक दीपक बाबेल ने व्यक्त किया। सहमंत्री विवेक मरोठी, प्रदीप चोपड़ा, संगठन मंत्री जितेंद्र चोपड़ा, एटीडीसी प्रभारी रजत बैद, एटीडीसी संयोजक दीपक कटारिया सहित कार्यकारिणी से अनेक साथीगण, अणुव्रत समिति, यशवंतपुर सभा का विशेष सहयोग रहा।

शिविर के ब्लड बैंक लायंस ब्लड बैंक द्वारा टीम को मूल्यांकन पत्र भेंट किया गया। ७५वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर यशवंतपुर मित्र मंडल द्वारा सभी ब्लड डोनर्स को मिष्टान भेंट किया गया। तेयुप, बैंगलुरु द्वारा शिविर में कुल २२ यूनिट रक्त संग्रह किया गया।

स्वास्थ्य प्रोफाईल जाँच शिविर

राजराजेश्वरी नगर।

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर द्वारा इंदरचंद विजयलक्ष्मी चोपड़ा परिवार के सहयोग से आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में देश के ७५वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में ७५ प्रतिशत की छूट दर पर संपूर्ण स्वास्थ्य प्रोफाइल जाँच शिविर का आयोजन मात्र ११००/- रुपये में किया गया। इस शिविर में कुल ११७ लोगों की जाँच की गई और सभी को उचित सलाह दी गई। चोपड़ा परिवार ने सेवा कार्य की सराहना की।

शिविर में अभातेयुप से डॉ० आलोक छाजेड़, संजय बैद, तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, उपाध्यक्ष अमित नौलखा, धर्मेश नाहर, मंत्री विकास छाजेड़, सहमंत्री वरुण पटावरी, सरल पटावरी, कोषाध्यक्ष देवेंद्र नाहटा, संगठन मंत्री राकेश दुगड़, निवर्तमान अध्यक्ष नरेश बांठिया, परिषद के परामर्शक राजेश छाजेड़, विकास दुगड़, पूर्व अध्यक्ष राजेश भंसाली, आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के समिति सदस्यों एवं तेयुप कार्यसमिति सदस्यों आदि का सहयोग प्राप्त हुआ।

एटीडीसी में ध्वजारोहण

जयपुर।

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर न्यास के चेयरमैन राजेश छाजेड़ ने झंडारोहण करते हुए कहा कि हम सभी अपने दायित्व के प्रति सजग रहेंगे तो सेंटर की व्यवस्थाओं को सुलभ बनाकर जन-सामान्य को बेहतर सुविधाएँ प्रदान कर सकते हैं। सेवा के क्रम में सेंटर की ओर से रियायती दर पर जाँच की सुविधा आमजन को प्रदान की जा रही है। इस अवसर पर न्यास के कोषाध्यक्ष करण नाहटा और ट्रस्टी डॉ० अनिल भंडारी ने अपने विचार व्यक्त किए।

सामूहिक ध्वजारोहण

बालोतरा।

तेयुप मंत्री नवीन सालेचा ने बताया कि सर्वप्रथम साध्वी मंजुयशा जी ने सहवर्ती साध्वियों के साथ सबको मंगल पाठ सुनाया उसके बाद ध्वजारोहण तेरापंथ सभा अध्यक्ष शांतिलाल डागा, महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा, तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल, मंत्री नवीन सालेचा द्वारा किया गया। फिर राष्ट्रगान का संगान किया गया और ध्वज को सलामी दी गई।

इस अवसर पर महिला मंडल मंत्री संगीत बोथरा, निवर्तमान अध्यक्ष अरविंद सालेचा, उपाध्यक्ष रोशन बागरेचा, सहमंत्री राजेंद्र वैद मूथा, किशोर मंडल संयोजक अक्षय मेहता, उपसंयोजक जैनम सालेचा, कन्या मंडल संयोजिका साक्षी वैद मूथा उपसंयोजिका मनीष ओस्तवाल के साथ महिला मंडल की पदाधिकारी टीम और किशोर मंडल के सदस्य उपस्थित थे।

स्वतंत्रता दिवस पर देशभकित संगीत

बैंगलुरु।

तेयुप के तत्त्वावधान में प्रज्ञा संगीत सुधा द्वारा भारत के ७५वें स्वतंत्रता दिवस पर सीमा तैनात जवानों की श्रद्धा के प्रति देशभक्ति गीतों की संगीत संध्या तेरापंथ भवन, गांधीनगर में आयोजित हुई। साध्वी लावण्यश्री जी के मंगलपाठ सुन कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। सभी का स्वागत तेयुप बैंगलुरु के अध्यक्ष विनय बैद ने किया। साध्वी सिद्धांतश्री जी व साध्वी दर्शितप्रभा जी ने कार्यक्रम में उद्बोधन एवं गीतिका की प्रस्तुति दी। प्रभारी रंजीत राखेचा के नेतृत्व में प्रज्ञा संगीत सुधा द्वारा सुमधुर प्रस्तुति हुई।

मंत्री प्रवीण बोहरा ने जैन तेरापंथ न्यूज फेसबुक पेज पर लाइव किया व सहमंत्री विवेक मरोठी ने तेयुप फेसबुक पेज पर लाइव प्रसारण किया। कार्यक्रम का संचालन संयोजक प्रसन्न धोका ने किया। सहमंत्री प्रदीप चोपड़ा, संगठन मंत्री जितेंद्र चोपड़ा, पूर्व अध्यक्ष रोहित कोठी, ललित सेठिया, विकास बाबेल, नवीन बरड़िया, गगन बरड़िया का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम के प्रायोजक रंजीत, प्रतिभा, हिमिक, जश्न राखेचा परिवार रहे।

स्वतंत्रता सैनानी फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता

वसई।

तेयुप एवं तेममं द्वारा तेरापंथ भवन में स्वतंत्रता दिवस पर विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। सर्वप्रथम ध्वजारोहण के कार्यक्रम से शुरुआत की गई। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मोहनलाल गुंदेचा ने ध्वजारोहण किया और सभी ने ध्वज को सलामी देते हुए राष्ट्रगान का संगान किया। ध्वजारोहण कार्यक्रम का संचालन मनोज मेहता ने किया।

तत्पश्चात आगे का कार्यक्रम महाश्रमण हॉल में आयोजित किए गए। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के साथ उपासक शंकर गुंदेचा के द्वारा की गई। कार्यक्रम की शुरुआत के पश्चात तेममं की सह-संयोजिका सुनीता नरेश हिरण के द्वारा सभी का स्वागत किया गया।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों के द्वारा फैंसी ड्रेस के माध्यम से विविध वेशभूषा में देश के स्वतंत्रता सेनानियों को दर्शाया और उनके प्रति अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम के मध्य में समाज के गणमान्य सदस्यों के द्वारा जैन विद्या परीक्षा के प्रमाण पत्रों का सभी परीक्षार्थियों में वितरण किया गया। महिला मंडल के सदस्यों ने देशभक्ति गीत का संगान किया एवं किशोर मंडल के द्वारा एक गीत के द्वारा अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति दी गई। कार्यक्रम के अंत में तेरापंथ कन्या मंडल की सदस्यों द्वारा नृत्य की प्रस्तुति दी गई।

तेयुप के मंत्री चंद्रदीप संचेती के द्वारा पधारे हुए सभी सदस्यों का आभार ज्ञापन किया गया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप के सदस्य हितेंद्र सामोता ने किया।

त्रिदिवसीय कार्यक्रम का आयोजन

डोंबिवली।

साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में बोधि दिवस, चातुर्मासिक चतुर्दशी, तेरापंथ स्थापना दिवस का त्रिदिवसीय कार्यक्रम तप, त्याग, व श्रद्धा भक्ति के साथ समायोजित किया गया।

बोधि दिवस : कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र द्वारा की गई। उसके पश्चात तेयुप द्वारा मंगलाचरण किया गया। साध्वी संयमलता जी ने कहा कि इस धरती पर कुछ शख्स ऐसे आते हैं जिसका जन्म दिवस भी महत्त्वपूर्ण होता है। आचार्य भिक्षु जिनका जन्म आषाढ़ शुक्ला त्रियोदशी को हुआ और उसी दिन आपके भीतर नई चेतना का जागरण हुआ, क्रांति का बीज अंकुरित हुआ, जिसने शुद्धाचार विचार का पथ प्रदर्शित किया।

साध्वी मनीषाप्रभा जी ने कहा कि भिक्षु एक चमत्कारी मंत्र है इस मंत्र को आस्था से जपने वाला अपने कष्टों से निजात पा सकता है। साध्वी रौनकप्रभा जी ने स्वरचित गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मार्दवश्री जी ने किया।

चातुर्मासिक चतुर्दशी : कार्यक्रम की मंगल शुरुआत महिला मंडल के मंगलाचरण से हुई। साध्वी संयमलता जी ने कहा कि चातुर्मास समय आत्म-जागरण की घड़ी है। साधु-साध्वियाँ इस समय में श्रावक-श्राविकाओं का आध्यात्मिक उपदेश के साथ-साथ तप, संयम का आह्वान करते हैं तथा साध्वीश्री जी ने हाजरी का वाचन करते हुए कहा इस शासन में गुरु आज्ञा की अनुपालना ही सर्वोपरि है।

साध्वी मनीषाप्रभा जी ने कहा कि चातुर्मास चतुर्दशी जागरण का आह्वान है। साध्वी रौनकप्रभा जी ने एक घटना के माध्यम से रात्रि भोजन त्याग की प्रेरणा दी। पूर्व अध्यक्ष सुरेश सिंघवी ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मार्दवश्री जी ने किया।

तेरापंथ स्थापना दिवस : कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुई। साध्वी संयमलता जी ने कहा कि आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन तेरापंथ की स्थापना हुई या यह कहें कि आज के दिन तेरापंथ को सक्षम गुरु मिला। आचार्य भिक्षु अनुत्तर संयम के उपासक थे। साध्वीवृंद ने तेरापंथ की कहानी एक रोचक कार्यक्रम के माध्यम से प्रस्तुत की।

तेयुप, महिला मंडल, कन्या मंडल द्वारा गीत के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। सभा मंत्री पारस बड़ाला ने गुरु के जीवन में क्या महत्ता विषय पर विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मार्दवश्री जी ने किया।

दायित्व बोध ग्रहण समारोह

राजाजी नगर।

अभातेयुप द्वारा निर्धारित २०२१-२२ कार्यकाल का जैन संस्कार विधि द्वारा शपथ ग्रहण समारोह तेरापंथ भवन में साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के सामुहिक मंगलाचरण से हुआ। तेयुप द्वारा संचालित भिक्षु श्रद्धा स्वर टीम द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। अभातेयुप राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। संस्कारक की भूमिका विक्रम दुगड़, जितेंद्र घोषल व अरविंद बैद ने विभिन्न मंगल मंत्रोच्चार द्वारा शपथ ग्रहण की विधि संपन्न की। निवर्तमान अध्यक्ष सतीश पोरवार ने नव मनोनीत अध्यक्ष मनोज मेहता को अध्यक्षता की शपथ दिलाई।

नव मनोनीत अध्यक्ष मनोज मेहता ने अपनी नवगठित टीम की घोषणा की एवं सभी कार्यसमिति सदस्यों को शपथ दिलाई गई। अध्यक्ष मनोज मेहता ने बताया कि अभातेयुप द्वारा निर्देशित सेवा, संस्कार और संगठन के सभी कार्य को पूरी निष्ठा और शुद्ध अंतःकरण के साथ कार्य करने हेतु संकल्प लिया।

साध्वीश्री जी ने युवकों को अपना मंगल उद्बोधन दिया। गांधीनगर सभा अध्यक्ष सुरेश दक, अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल पोरवार, ट्रस्ट उपाध्यक्ष माणकचंद मूथा और राजाजीनगर सभा मंत्री महावीर मेहता, राजाजीनगर महिला मंडल चेतना वैदमूथा एवं मंत्री सीमा श्रीश्रीमाल, तेयुप, विजयनगर अध्यक्ष अमित दक, बैंगलोर अध्यक्ष विजय बैद एवं अभातेयुप परिवार की उपस्थिति रही। संचालन मंत्री राजेश देरासरिया ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह

दक्षिण मुंबई।

शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' के सान्निध्य में तेयुप की कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के आचार्य तुलसी सभागृह में आयोजित हुआ। तेयुप सदस्यों द्वारा विजय गीत के संगान से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। नव निर्वाचित तेयुप अध्यक्ष पूरण चपलोत ने सभी पदाधिकारियों का स्वागत किया। अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष महेश बाफना ने शपथ दिलाई।

दक्षिण मुंबई परिषद शाखा प्रभारी राजेश कोठारी ने दक्षिण मुंबई परिषद की जानकारी दी और नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को शुभकामनाएँ दी। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष गणपतलाल डागलिया, आचार्य महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउंडेशन के उपाध्यक्ष रमेश, महिला मंडल की संयोजिका रेखा धाकड़ आदि ने अपने विचार रखे। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने अभातेयुप के आयामों के बारे में बताया और शुभकामनाएँ प्रेषित की।

साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' ने कहा कि परिषद सभी को साथ में लेकर चले एवं सभी को जोड़े और ठंडे दिमाग से काम करें। कार्यक्रम में अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष महेश बाफना, प्रभारी राजेश कोठारी, फाउंडेशन से रमेश मेहता, इंदरमल धाकड़, लक्ष्मीलाल डागलिया एवं अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। संचालन मंत्री रोनक धाकड़ ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप के उपाध्यक्ष नितेश धाकड़ ने किया। अध्यक्ष पूरण चपलोत ने कार्यकारिणी की घोषणा की।

शपथ ग्रहण समारोह

अमराईवाड़ी-ओढव।

तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ युवक परिषद का संयुक्त शपथ विधि कार्यक्रम जैन संस्कार विधि द्वारा संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई, किशोर मंडल द्वारा प्रेरणा गीत का संगान हुआ। महिला मंडल के नव मनोनीत अध्यक्ष संगीता सिंघवी एवं तेयुप के नव मनोनीत अध्यक्ष दिलीप सिसोदिया ने संयुक्त तौर पर शथप ली।

महिला मंडल अध्यक्षा को अभातेममं की पूर्व सदस्या अदीति सेखानी ने शपथ दिलाई व तेयुप के अध्यक्ष दिलीप सिसोदिया को निवर्तमान अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने शपथ दिलाई। जैन संस्कार विधि के अमराईवाड़ी ओढव के संस्कारक पंकज डांगी, दिनेश टुकलिया एवं विकास डांगी ने मंत्रोच्चार किया। महिला मंडल अध्यक्षा व तेयुप अध्यक्ष ने संयुक्त रूप से मंगलभावना पत्रक की स्थापना की।

दोनों प्रतिनिधियों ने अपनी-अपनी टीम की घोषणा की और दोनों टीमों को शपथ दिलाई। महिला मंडल अध्यक्षा संगीता सिंघवी और तेयुप अध्यक्ष दिलीप सिसोदिया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम के पश्चात संपूर्ण वर्ष के लिए संस्कारकों ने नवगठित टीम से त्याग-प्रत्याख्यान करवाए।

साध्वीप्रमुखाश्री का जन्मदिन व मुमुक्षु अभिनंदन समारोह

इचलकरंजी।

साध्वी प्रज्ञाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ की असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के ८१वें जन्मदिवस एवं बालोतरा से समागत मुमुक्षु शिक्षा बालड़ के अभिनंदन का कार्यक्रम स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर साध्वी प्रज्ञाश्री जी ने साध्वीप्रमुखाश्री जी के प्रति श्रद्धा उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री जी वात्सल्य की प्रतिमूर्ति है, उनका विलक्षण जीवन हम सबके लिए प्रेरणादायी है। साध्वीप्रमुखाश्री जी जिस तरह से हम सबकी सारणा-वारणा कर रही है, हम उनके प्रति कृतज्ञ है। साध्वीश्री जी ने मुमुक्षु शिक्षा बालड़ के प्रति मंगलकामनाएँ करते हुए कहा कि बहन शिक्षा आत्मिक शिक्षा व दीक्षा दोनों में खूब आगे बढ़े। उनका संयम जीवन प्रशस्त बने। साध्वी विनयप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया।

मुमुक्षु शिक्षा बालड़ ने अपने वक्तव्य में संयम व साधना के महत्त्व को सरगम के रूप में बताया। इस अवसर पर साध्वी प्रज्ञाश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार के साथ शुरू हुए कार्यक्रम में सर्वप्रथम कन्या मंडल द्वारा अभिनंदन गीतिका का संगान किया गया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष महावीर आंचलिया ने स्वागत वक्तव्य दिया। अशोक बाफना व कमलेश छाजेड़ ने मुमुक्षु बहन का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। मुमुक्षु शिक्षा के पिता बाबूलाल बालड़ ने सभी से भीलवाड़ा में आयोजित होने जा रहे दीक्षा समारोह में उपस्थित हेतु सभी को आह्वान किया। तेयुप अध्यक्ष मुकेश भंसाली, महिला मंडल कार्यसमिति सदस्य संगीता देवी पटवारी, पवन बालड़ आदि ने भी अपने भावों की प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभा द्वारा मुमुक्षु बहन का साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री पुष्पराज संकलेचा एवं आभार ज्ञापन रजनी पारख ने किया।

दस का दम क्विज प्रतियोगिता

जीन्द।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में तेयुप के तत्त्वावधान में दस का दम क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में पच्चीस बोल, तेरापंथ का इतिहास, जैन दर्शन, ११ आचार्यों का जीवन-दर्शन, जैनों के ऐतिहासिक स्थल आदि प्रश्न कम्प्यूटर के माध्यम से पूछे गए। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के माध्यम से साध्वी कुंथुश्री जी ने किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि भगवान महावीर की वाणी है—पहले ज्ञान करो फिर दया का पालन करो। ज्ञान नहीं होगा तो अहिंसा का पालन कैसे करोगे। पाँच आचार में ज्ञान का आचार पहले नंबर पर है। मोक्ष प्राप्त करने का पहला पिलर है सम्यक् ज्ञान, आठ कर्मों में पहला कर्म है ज्ञानावरणीय कर्म। अपने आपको जानना तथा आत्म बोध होना सम्यक् ज्ञान है।

कार्यक्रम रोचक, प्रेरक व ज्ञानवर्धक रहा, उपस्थित श्रोताओं के लिए भी उपयोगी रहा। प्रश्नोत्तर रूपरेखा की तैयारी में साध्वी सुलभयशा जी का अथक परिश्रम रहा। उसे सफल बनाने में संयम जैन, प्रेक्षा जैन, मोहिनी जैन, राजेश जैन, कुणाल मित्तल आदि ने सराहनीय सहयोग दिया।

कार्यक्रम का संचालन प्रेक्षा जैन ने किया। प्रायोजक की भूमिका अग्रवाल स्वीट वाले अनिल अग्रवाल तथा कृष्णा अग्रवाल ने निभाई। प्रतियोगिता में दर्शन ग्रुप प्रथम, चारित्र ग्रुप द्वितीय, ज्ञान ग्रुप तृतीय स्थान पर रहे। सभी ग्रुपों को तेरापंथ युवक परिषद से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में सभाध्यक्ष खजानचंद, मंत्री नारायण सिंह, डॉ० अनिल जैन, श्रीचंद जैन, राजकिशन जैन ने सभी को पुरस्कृत किया।

ज्ञानशाला प्रशिक्षक कार्यशाला

गांधीनगर, बैंगलोर।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में प्रशिक्षक बहनों के लिए कार्यशाला एवं प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। साध्वी लावण्यश्री जी ने जीवन में अनुशासन के महत्त्व के बारे में बताया। साध्वीश्री जी ने कहा कि अनुशासन ही हमारे धर्मसंघ का आधार स्तंभ है। साध्वी सिद्धांतश्री जी एवं साध्वी दर्शितप्रभा जी ने प्रतियोगिता की आयोजना में श्रम नियोजित किया। लगभग ४५ प्रशिक्षक बहनों ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेश दक एवं निवर्तमान अध्यक्ष मूलचंद नाहर ने ज्ञानशाला के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन संयोजिका नीता गादिया ने किया। आभार ज्ञापन चेतना वैद मूथा ने किया।

मुख्य प्रशिक्षक मंजु गन्ना, संयोजिका लता गांधी, अनीता नाहर और सभी प्रशिक्षक बहनों का भरपूर सहयोग रहा। तेरापंथ सभा द्वारा २५ बोल प्रतिक्रमण प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु सभी प्रशिक्षक बहनों का सम्मान किया गया।

✦ आस्तिक विचारधारा का आधार अध्यात्म है, जबकि नास्तिक विचारधारा भौतिकवाद से संपृक्त है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

राष्ट्रीय कन्या मंडल अधिवेशन 'EVOLVE' का आयोजन

भीलवाड़ा/जयपुर।

अखिल भारतीय महिला मंडल के निर्देशन में १७वाँ राष्ट्रीय कन्या मंडल अधिवेशन 'EVOLVE' का भीलवाड़ा में आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में आगाज हुआ। आचार्यश्री महाश्रमण जी ने कन्याओं को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि कन्याओं में लौकिक शिक्षा के साथ बौद्धिक व आध्यात्मिक शिक्षा का भी विकास हो ऐसा प्रयास करना है। कन्याओं में अच्छे संस्कारों का, सहिष्णुता का, निर्भीकता का विकास हो, कन्याएँ कुशल प्रवक्ता बनें, उपासिका बनें, ऐसा प्रयास करना है। अधिवेशन के मंगल कार्यक्रम में असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि कन्याएँ हर क्षेत्र में उत्तरोत्तर विकास कर रही हैं, भविष्य में भी कन्याएँ परिष्कृत व स्थायी विकास करें, यह अपेक्षित है। अधिवेशन के विभिन्न सत्र १६-१८ अगस्त को जयपुर में आयोजित किए गए।

१६ अगस्त सायंकालीन सत्र में 'कन्याएँ - विकास की उजली दिशाएँ' कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसमें मुख्य वक्ता राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नीलम सेठिया रही।

१७ अगस्त प्रातः सत्र में 'श्रद्धा व समर्पण का सेतु - बनें विकास का हेतु' कार्यक्रम में मुख्य वक्ता कनक बरमेचा ट्रस्टी अभातेममं रही। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सरिता डागा ने गुरुदेव द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन किया तथा साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के संदेश का वाचन कार्यसमिति सदस्य विमला दुगड़ ने किया।

अपराह्न में साध्वी यशोमती जी के सान्निध्य में 'बुलंद इरादे-निश्चित कामयाबी' सत्र का आयोजन हुआ। 'सफलता की खुशबू' स्पीकर मानसी ठक्कर मुख्य वक्ता रही। सायंकालीन सत्र में Art-A Colourful Pattern of life इस सत्र में स्मार्ट मॉडल कंपीटिशन व २५ बोल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

अधिवेशन के समापन सत्र में 'कर्तृव्य की धार-व्यक्तित्व बनें असरदार' कार्यक्रम हुआ। अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्ष पुष्पा बैद, महामंत्री तरुणा बोहरा, ट्रस्टी सौभाग्य बैद, जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष दौलत डागा, तथा रा०का० सदस्य नरपत बैद, जयपुर सभा के अध्यक्ष नरेश मेहता व मंत्री युवा रत्न पन्नालाल पुगलिया, अणुविभा अध्यक्ष पन्नालाल बैद सहित अनेक वक्ताओं ने कन्याओं के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करते हुए अपने विचार प्रेषित किए।

सभी सत्रों में कन्या मंडल के कर्तृत्व का मूल्यांकन करते हुए पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कन्या मंडल प्रभारी रमण पटावरी व सह-प्रभारी नमिता सिंघी ने कन्याओं को बधाई देते हुए शुभकामनाएँ प्रेषित की। कन्या मंडल संयोजिका यशिका खटेड़ व प्रज्ञा नौलखा बांठिया ने भी अपनी विशेष प्रस्तुति के द्वारा अपने विचार रखे। देशभर के अनेक कन्या मंडल द्वारा विभिन्न विषयों पर आकर्षक प्रस्तुति दी गई।

तकनीकी कार्य संचालन में सह-प्रचार-प्रसार मंत्री सोनम बागरेचा का विशेष सहयोग रहा। रा०का०स० विजय लक्ष्मी भूरा, गुलाब बोथरा, मधु श्यामसुखा, सुशीला चोपड़ा, जयश्री जोगड़, संतोष बोथरा, अर्चना भंडारी ने अपने विचार रखे। जयपुर महिला मंडल की सेवाएँ सराहनीय रही। देशभर से लगभग १०५ कन्याएँ इस अधिवेशन में संभागी बनीं।

तत्त्वज्ञान एवं तेरापंथ दर्शन परीक्षा

जयपुर।

आचार्यप्रवर की अनुकंपा से अभातेममं की सशक्त योजना आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत तत्त्वज्ञान एवं तेरापंथ दर्शन के अंतिम भाग की मौखिक एवं लिखित परीक्षा जयपुर अणुविभा में संपन्न हुई, जिसमें देशभर से १०१ परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। इस योजना की निर्देशिका पुष्पा बैंगानी एवं संयोजिका मंजू भूतोड़िया के निर्देशन में यह परीक्षा संपादित हुई।

ट्रस्टी कनक बरमेचा, परामर्शक लता जैन ने भी एग्जामिनर की भूमिका निभाई। दिल्ली से कुसुम लुणिया का विशेष श्रम लगा। राष्ट्रीय अध्यक्ष पुष्पा बैद, ट्रस्टी सौभाग्य बैद, उपाध्यक्ष सरिता डागा, महामंत्री तरुणा बोहरा, रा०का०स० विजयलक्ष्मी भूरा, बिमला दुगड़, मधु श्यामसुखा, सुशीला चोपड़ा, गुलाब बोथरा ने अपनी गरिमामय उपस्थिति दर्ज करवाई। जयपुर शहर एवं जयपुर की सी-स्कीम महिला मंडल की सक्रिय भागीदारी एवं श्रम से यह परीक्षा सफलतम रही।

शपथ ग्रहण समारोह

इचलकरंजी।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप का सत्र-२०२१-२२ कार्यकाल का जैन संस्कार विधि द्वारा शपथ ग्रहण समारोह साध्वी प्रज्ञाश्री जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। जैन संस्कारक विकास सुराणा ने नमस्कार महामंत्र से विधि प्रारंभ की। निवर्तमान अध्यक्ष प्रवीण भंसाली ने नव निर्वाचित अध्यक्ष मुकेश भंसाली को शपथ दिलाई। तत्पश्चात मुकेश भंसाली ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की व सभी को शपथ दिलाई।

साध्वी प्रज्ञाश्री जी ने युवकों का उत्साह बढ़ाने हेतु गीतिका का संगान किया। सभा अध्यक्ष महावीर आंचलिया ने युवाओं को आशीर्वचन प्रदान किया और कवि शांतिलाल संकलेचा ने अपनी कविता से नवगठित कार्यकारिणी को मंगलकामना दी। मंगलपाठ से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

स्वतंत्रता दिवस पर विविध कार्यक्रमों के आयोजन

स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम

मुंबई।

अणुव्रत समिति ने ७५वें स्वतंत्रता दिवस पर तेरापंथ भवन, चेंबूर में स्वतंत्रता-नए क्षितिज की खोज कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत अणुव्रत गीत से हुई। ज्ञानशाला के बच्चों ने सुंदर प्रस्तुति दी। अणुव्रत आचार संहिता का वाचन अणुविभा के संगठन मंत्री विनोद कोठारी ने किया। अणुव्रत समिति, मुंबई अध्यक्ष कंचन सोनी ने सभी का स्वागत किया। मुनि अभिजीत कुमार जी ने कहा–नए क्षितिज की खोज में हमें अहं को हटाना है, हमें सकारात्मक, शांतिपूर्ण जीवन जीना चाहिए।

प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी ने बताया कि दुनिया में जो अफरातफरी है उसका बहुत बड़ा कारण आदमी के भीतर के भाव हैं–क्रोध, मान, माया, लोभ।

मुख्य अतिथि राकेश सियाल ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि भारतीय फिल्म और टीवी अभिनेता मनीष वाधवा ने अपने अनुभव बताए। मुख्य वक्ता, साधक व जीवन प्रचारक दिलीप सरावगी ने कहा कि क्या हमारी स्वतंत्रता दूसरों की स्वतंत्रता में बाधक तो नहीं, हमारी स्वतंत्रता मानव को प्रमादी, अविवेकी दानव तो नहीं बना रही या क्या हमारी स्वतंत्रता मानव को विकास की तरफ ले जा रही है या ह्रास की तरफ?

मुनि जंबू कुमार जी ने संदेश दिया कि विनम्रता के साथ धैर्यता भी चाहिए, हमें धैर्य से कार्य करना है। स्वाति सोनी ने अणुव्रत क्रिएटिव कॉन्टेस्ट २०२० के बारे में बताया कि मुंबई से ८६६ प्रतिभागी और ४५ स्कूल ने रजिस्टर किया। सभी राज्य और राष्ट्रीय स्तर के विजेताओं, शिक्षकों व मुंबई टीत का सम्मान किया। ड्राइंग प्रतियोगिता में नैतिक नोगटा राष्ट्रीय स्तर के विजेता रहे।

कार्यक्रम में कल्याण परिषद संयोजक और अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी, मुंबई सभा से विजय पटवारी, डालचंद कोठारी, एसएमसी ग्लोबल फाइनेंस के निदेशक अनुराग बंसल, रोशन मेहता, रमेश धोका, रमेश सोनी, मूलचंद लोढ़ा, सोहनलाल सिंघवी, मनोहर कच्छारा, राजकुमार चपलोत, जसराज छाजेड़, सुरेश बाफना, सुरेश मेहता, श्वेता सुराणा, जयश्री बड़ाला, रेखा सियाल, विमला कोठारी, मधु मेहता, भाग्यवती परमार, शीला चंडालिया, ललिता सोनी, सीमा सोनी एवं कार्यकारिणी सदस्य, क्षेत्रीय संयोजक सह-संयोजक, विभागीय प्रभारी, सहप्रभारी की गरिमामयी उपस्थिति रही।

देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति

हासन, कर्नाटक।

महिला मंडल, हासन के तत्त्वावधान में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। महिला मंडल के अध्यक्ष संगीता कोठारी ने शहीदों के बलिदान पर कविता द्वारा प्रस्तुति दी। नवयुवती बहनें नम्रता सुराणा, ममता कोठारी, सपना सुराणा, निकिता कोठारी, नीता भंसाली और पूजा कोठारी ने देशभक्ति की प्रस्तुति दी।

मीनल भंसाली और तृप्ती भंसाली ने बेटी पर गीत प्रस्तुत किया। संतोष भंसाली पिंकी गुगलिया, रेखा सुराणा, उमा तातेड़, सूरज तातेड़, संजू बरलोटा, मोनिका कोठारी ने भावों से देश पर अपने भाव व्यक्त किए। अंत में नीलम कोठारी ने आभार ज्ञापन किया। विनिता सुराणा ने संचालन किया।

अणुव्रत उत्तम जीवनशैली देता है

राजराजेश्वरी नगर।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में स्वतंतत्रता दिवस के उपलक्ष्य में तेयुप एवं तेममं की संभागिता के साथ ध्वजारोहण का कार्यक्रम संपन्न हुआ। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के मंगलपाठ के साथ राष्ट्रगान का संगान किया गया। कार्यक्रम तेरापंथ कन्या मंडल के मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ। सभा अध्यक्ष मनोज डागा ने कार्यक्रम में आए सभी का स्वागत किया।महिला मंडल, सभा एवं तेयुप द्वारा गीतिका का संगान किया गया। तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, महिला मंडल उपाध्यक्षा शोभा बोथरा, मंत्री सीमा छाजेड़, संस्थापक अध्यक्ष कमल सिंह दुगड़, वरुण दुगड़, युवराज छाजेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि आज का दिन केवल समारोह मनाने का नहीं बल्कि अतीत के सिंहावलोकन का है। शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने अपना उद्बोधन दिया। साध्वी मंजूरेखा जी, साध्वी उदितप्रभा जी, साध्वी निर्भयप्रभा जी एवं साध्वी चेलनाश्री जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री विक्रम मेहर ने किया। आभार ज्ञापन उपासक छत्रसिंह सेठिया ने किया।

देशभक्ति गीत संध्या कार्यक्रम

लिलुआ।

तेरापंथ सभा एवं तेयुप द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर देशभक्ति गीत का कार्यक्रम तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। भाइयों ने अपने मधुर स्वर से देशभक्ति गीत गाए। अनेक सदस्यों ने कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। मनोज बर्मन ने कार्यक्रम का संचालन किया।

मंगलभावना समारोह

सादुलपुर।

शासनश्री साध्वी मानकुमारी जी के सान्निध्य में सेठिया अतिथि भवन में दीक्षार्थिनी सारिका सुराणा के अभिनंदन का कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कंचन देवी कोठारी के मंगलाचरण से हुआ। शासनश्री साध्वीश्री जी ने कहा कि संयम का मार्ग वही व्यक्ति अपना सकता है जिसकी आत्मशक्ति जागृत होती है। सारिका तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित होने जा रही है यहाँ दीक्षित होने का अर्थ है सर्वात्मना गुरुचरणों में समर्पित हो जाना।

इस अवसर पर सारिता ने अपने वैराग्य के बारे में विचार रखे। साध्वी कुशलप्रज्ञा जी, साध्वी कमलयशा जी, साध्वी इंदुयशा जी, काव्या, भावना, उषा दुगड़, महिला मंडल अध्यक्षा प्रेम कोचर, स्नेह डागा ने दीक्षार्थिनी सारिका के प्रति मंगलकामना की। पायल व कृतिका ने रोचक परिसंवाद की प्रस्तुति दी। महिला मंडल के सुमधुर गीत से वातावरण संगीतमय हो गया। पत्रकार श्याम जैन ने सारिका का परिचय दिया। श्रावक दंपति भीखी देवी हनुमानमल सेठिया व प्रमिला कमल सेठिया ने मुमुक्षु सारिका तथा उसके माता-पिता का सम्मान किया। महिला मंडल व अणुव्रत समिति अध्यक्ष कमल बोथरा ने भी सम्मान किया। साध्वी कीर्तिरेखा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में श्रावक समाज की उपस्थिति सराहनीय रही। कार्यक्रम की सुव्यवस्था में सभी का योगदान रहा।

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

समियाए धम्मे कार्यशाला

बालोतरा।

अभातेयुप के निर्देशानुसार तेयुप द्वारा समियाए धम्मे कार्यशाला का आयोजन किया गया। तेयुप मंत्री नवीन सालेचा ने कार्यक्रम की जानकारी दी। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी मंजुयशा जी के नवकार मंत्र के मंगलाचरण से हुई। साध्वी श्री ने कार्य गुप्ति के रूप में ध्यान का प्रयोग करवाया। साध्वी मंजुयशा जी ने विशेष उद्बोधन दिया।

तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल ने बताया कि इस अवसर पर लगभग ४२५ सामायिक हुई और सभी युवा साथियों को प्रतिदिन एक सामायिक करने का लक्ष्य दिया। इस अवसर पर तेरापंथ समाज के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

समियाए धम्मे कार्यशाला

तिरुपुर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप ने समियाए धम्मे कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में तेयुप के सदस्यों के साथ स्थानीय सभा, महिला मंडल के सदस्य उपस्थित रहे। इस अवसर पर कुल ५८ सामायिक हुए। परिषद की ओर से मीडिया प्रभारी अमन चोरड़िया ने उपस्थित सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया।

द्वितीय रक्तदान शिविर

सूरत।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा द्वितीय रक्तदान शिविर का आयोजन सूरत एवं नेमीनाथ को-ऑ० हाउसिंग सोसायटी के संयुक्त तत्त्वावधान में नेमीनाथ को-ऑ० हाउसिंग परिसर-माहेश्वरी भवन के सामने सिटीलाइट पर आयोजित किया गया। सामुहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम शुभारंभ हुआ।

एसएमसी वार्ड नं० २१ के पार्षद ब्रजेश उनड़कट, 'मैं हूँ सामायिक साधक' अभातेयुप राष्ट्रीय प्रभारी दीपक रांका, तेयुप सेवा प्रभारी हरीश सालेचा, एमबीडीडी समिति सदस्य आकाश लुणिया ने अपना रक्तदान किया। तेयुप, सूरत एवं नेमीनाथ को-ऑ० हाउसिंग सोसायटी के संयुक्त तत्त्वावधान में कुल २१ यूनिट रक्त एकत्रित हुआ।

इस शिविर में तेयुप, सूरत एमबीडीडी कमेटी एवं नेमीनाथ को-ऑ० हाउसिंग सोसायटी के रमेश लुणिया, संदीप पटेल, विवेक जैन, हितेश रायसोनी, श्रेयांस कोठारी का विशेष सहयोग रहा। सिविल ब्लड बैंक का सेवा हेतु साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। तेयुप अध्यक्ष गौतम बाफना ने सभी रक्तदाताओं, सहयोगियों एवं सिविल ब्लड बैंक का आभार व्यक्त किया।

मेगा ब्लड टेस्ट कैंप का आयोजन

अमराईवाड़ी-ओढ़व।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर पर मेगा ब्लड टेस्ट कैंप का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। एटीडीसी संयोजक कैलाश बाफना ने सभी का स्वागत किया। एटीडीसी संयोजक मुकेश सिंघवी ने एटीडीसी द्वारा आयोजित कैंप की एवं अन्य गतिविधियों की जानकारी दी।

इस अवसर पर ४० सदस्यों ने इस कैंप में रजिस्ट्रेशन करवाकर कैंप को सफल बनाया। कैंप में तेयुप अध्यक्ष दिलीप सिसोदिया, मंत्री हितेश चपलोत, बंसीलाल बड़ाला, दिनेश चंडालिया, दिनेश सिंघवी, अभातेयुप सदस्य सतीश चोरड़िया, सभा अध्यक्ष रमेश पगारिया, मंत्री गणपत हिरण आदि अनेक सदस्यगण उपस्थित थे।

समस्त कैंप के सहयोगी के रूप में चंदनमल, महावीर, अमित, गौतम ओस्तवाल परिवार का विशेष योगदान रहा। समस्त टीम द्वारा चंदनमल ओस्तवाल का सम्मान किया गया।

समियाए धम्मे कार्यशाला

सूरत।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा तेरापंथ भवन में सामायिक कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वी लब्धिश्री जी द्वारा महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। मंगलाचरण तेयुप भजन मंडली द्वारा किया गया। तेयुप अध्यक्ष गौतम बाफना ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। सामायिक का बैनर अनावरण किया गया। सामायिक साधक के राष्ट्रीय प्रभारी दीपक रांका ने अपने भाव व्यक्त किए।

समणी प्रणवप्रज्ञा जी ने गीत का संगान किया। समणी डॉ० अक्षयप्रज्ञा जी ने सामायिक का महत्त्व बताया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री अभिनंदन गादिया ने किया।

सामायिक दिवस

कांकरोली।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप ने सामायिक दिवस का आह्वान किया। इस अवसर पर तेयुप के मंत्री दिव्यांश कच्छारा, सहमंत्री लविश मादरेचा, कोषाध्यक्ष रितेश टुकलिया उपस्थित थे।

इस अवसर पर संजय कुमार जी स्वामी ने कहा कि सामायिक एक उत्कृष्ट साधना है। मुनि प्रकाश कुमार जी स्वामी ने कहा कि समता की साधना ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। और सिद्धप्रज्ञ जी ने कहा कि सामायिक से जीवन में नया निखार आता है। आभार मंत्री दिव्यांश कच्छारा ने व्यक्त किया।

सेवा कार्य

लिलुआ।

तेयुप समय-समय पर सेवा कार्य का आयोजन करती रहती हैं। इस अवसर पर तेयुप लिलुआ ने क्षेत्र भागढ़ में १०० गरीब बच्चों को अल्पाहार दिया। कार्यक्रम में तेयुप, लिलुआ के ६ सदस्य उपस्थित थे।

समियाए धम्मे

लिलुआ।

अभातेयुप के महत्त्वपूर्ण आयाम 'मैं हूँ सामायिक साधक' के अंतर्गत वर्ष पर्यन्त चलने वाला कार्यक्रम समियाए धम्मे में तेयुप द्वारा लिलुआ, तेरापंथ भवन, बेलूर तेरापंथ भवन एवं बेलूर प्रवेश में सेमिनार धम्मे की कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। कार्यशाला का शुभारंभ उपासक एवं आभा तेयुप संस्कारक आनंद लुनिया द्वारा एवं उपासक एवं आभार तेयुप संस्कारक अरुण नाहटा बेलूर प्रवेश में धम्मे सामायिक की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुई।

अध्यक्ष विकास पुगलिया ने अपने भाव प्रकट किए। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री द्वितीय अमित जैन ने किया एवं सभी का आभार ज्ञापन किया। सहयोगी संस्थाएँ– बेलूर बाली सभा, लिलुआ महिला मंडल, बेलूर बाली महिला मंडल रही।

समियाए धम्मे कार्यशाला

जसोल।

अभातेयुप के निर्देशानुसार तेयुप द्वारा समियाए धम्मे कार्यशाला का आयोजन किया गया। तेयुप मंत्री दिनेश वडेरा ने बताया कि पूरे देश में प्रतिदिन सामायिक करने का लक्ष्य लेकर इस कार्यशाला का आयोजन किया जाता है।

कार्यक्रम की शुरुआत मुनि धर्मेश कुमार जी द्वारा नवकार मंत्र के मंगलाचरण से हुई। मुनिश्री ने कार्यगुप्ति के रूप में ध्यान का प्रयोग करवाया। सामायिक में ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की शुद्ध आराधना करने की बात कही। तेयुप अध्यक्ष जितेंद्र कुमार ने बताया कि इस अवसर पर लगभग २८३ सामायिक हुई। कार्यशाला में तेरापंथ समाज के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

वैक्सीनेशन कार्यक्रम

सूरत।

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य महाप्रज्ञ चिकित्सालय (सेवार्थ) में निःशुल्क वैक्सीन लगाने का कार्य सूरत म्यूनिसिपल के निर्देशन में निरंतर चालू है।

तेयुप की टीम इस कार्य को सुचारू रूप से संचालित कर रही है। जिसमें एएमसी स्टॉफ व तेयुप के युवा साथियों का अथक श्रम लगाया जा रहा है। सूरत म्यूनिसपल का भी पूर्ण सहयोग होने से इस कार्य का लाभ एएमसी टीम द्वारा जन-जन को पहुँचाया जा रहा है।

शपथ ग्रहण समारोह

बैंगलुरु।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, बैंगलुरु का सन् २०२१-२२ कार्यकाल का जैन संस्कार विधि द्वारा शपथ ग्रहण समारोह तेरापंथ भवन में साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में हुआ। कार्यक्रम शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से प्रारंभ हुआ। प्रज्ञा संगीत सुधा द्वारा गीतिका की प्रस्तुति दी गई। तेयुप पूर्व अध्यक्ष दीपक गोठी ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। संस्कारक विक्रम दुगड़, जितेंद्र घोषल व अरविंद बैद ने जैन संस्कार विधि से शपथ ग्रहण करवाई।

साध्वी लावण्यश्री जी ने अपना उद्बोधन दिया। साध्वी सिद्धांतश्री जी व साध्वी दर्शितप्रभा जी ने मंगलकामना प्रेषित की। निवर्तमान अध्यक्ष विनोद मूथा ने स्वागत वक्तव्य देते हुए नव मनोनीत अध्यक्ष विनय बैद को अध्यक्षता की शपथ दिलाई। मनोनीत अध्यक्ष ने अपनी गठित नई कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलाई।

अध्यक्ष विनय बैद ने बताया कि अभातेयुप द्वारा निर्देशित सेवा, संस्कार और संगठन के कार्य करने हेतु दृढ़ संकल्पित हैं। सभा अध्यक्ष सुरेश दक, अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल, मंत्री माणकचंद संचेती, ट्रस्ट उपाध्यक्ष माणकचंद मूथा, तेममं अध्यक्षा वर्णमाला पोखरणा, परामर्श एक अमित सुराणा व विशेष आमंत्रित साथी अनिल पोखरना ने नई गठित कार्यसमिति टीम के प्रति शुभकामनाएँ प्रेषित की। कार्यक्रम का संचालन प्रसन्न धोका ने किया।

रक्तदान शिविर

विजयनगर।

अभातेयुप निर्देशित मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत तेयुप द्वारा ब्लड डोनेशन ओन व्हील का आयोजन एचएसआर लेआउट में किया गया। दी स्टूडेंट सोसायटी के संयुक्त सहयोग से यह शिविर आयोजित हुआ।

कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष अमित दक ने सभी का स्वागत किया। महामारी एवं विषम परिस्थितियों में भी ११५ युनिट रक्त एकत्रित किया गया। यह रक्तदान सभी रक्तदाताओं एवं तेयुप तथा दी स्टूडेट सोसायटी की पूरी टीम के सहयोग से हुआ। इस अवसर पर विजयनगर परिषद के मंत्री विकास बांठिया, एमबीडीडी संयोजक करण मांडोत, रोनक जैन, मयंक मोर्या, धृति, अनुष एवं स्टूडेंट सोसायटी के सदस्य उपस्थित रहे।

तेयुप मंत्री विकास बांठिया ने दी स्टूडेंट सोसायटी को धन्यवाद प्रेषित किया एवं रक्तदान संयोजक करण मांडोत के विशेष श्रम के लिए उन्हें साधुवाद दिया।

समर्पण लक्ष्य प्राप्ति का मुख्य साधन

मैसूर।

तेरापंथ भवन में साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में अभातेयुप द्वारा संचालित सीपीएस कोर्स की शुरुआत स्थानीय तेयुप के तत्त्वावधान में हुई। 'कॉन्फिडेंस पब्लिक स्पिकिंग' का यह विशेष कोर्स स्थान-स्थान पर अभातेयुप द्वारा संचालित होता रहा है। मैसूर में यह कोर्स प्रथम बार हो रहा है। सीपीएस के उद्घाटन सत्र का प्रारंभ साध्वी मंगलप्रज्ञा जी द्वारा उच्चारित नमस्कार महामंत्र से हुआ। तेयुप के अध्यक्ष विक्रम पितलिया ने कार्यक्रम की जानकारी दी एवं प्रशिक्षक एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया।

साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि लक्ष्य की प्राप्ति समर्पण के बिना नहीं हो सकती है। लक्ष्य प्राप्ति का मुख्य साधन समर्पण है। प्रशिक्षक के रूप में बैंगलुरू से रक्षा मांडोत का आना हुआ। रक्षा मांडोत सीपीएस की प्रशिक्षिका हैं। इन्होंने भारत के अनेक स्थानों पर इसकी ट्रेनिंग दी है।

एटीडीसी अस्थि चिकित्सा शिविर

पूर्वांचल।

अस्थि चिकित्सा संबंधी बात जब भी आती है तो पूरे भारत वर्ष में एक नाम चिकित्सकों की अग्रणी श्रेणी में आता है–डॉ० धीरज मरोठी का। एक ऐसे चिकित्सक जिन्होंने १५००० से अधिक सफल ऑपरेशन एवं अनगिनत रोगियों का उपचार किया है।

एटीडीसी पूर्वांचल के लिए यह गौरव का विषय है कि ऐसे चिकित्सक हमसे जुड़े हुए हैं। डॉ० मरोठी के निर्देशन में अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन एटीडीसी में किया गया। कुल १७ व्यक्तियों ने इस शिविर में चिकित्सा का लाभ लिया।

परिषद अध्यक्ष विकास सिंघी, एटीडीसी प्रभारी नरेंद्र छाजेड़, सहप्रभारी हेमंत बैद के श्रम और उपस्थिति से कैंप का आयोजन अत्यंत सफल रहा।

✦ *विद्या संस्थानों में लौकिक विद्या पढ़ाई जाती है। इसके साथ अलौकिक अर्थात् आत्मविद्या पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

मंत्र दीक्षा के विविध आयोजन

धर्म में आस्था जगाती है - मंत्र दीक्षा

धर्म में आस्था जगाती है - मंत्र दीक्षा

आर०आर० नगर।

राजाराजेश्वरी नगर, तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम संपन्न हुआ। साध्वीवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार के पश्चात ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा मंगल गीत का संगान किया गया। शुभकामना वक्तव्य ज्ञानशाला संयोजिका प्रिया छाजेड़ ने दिया तथा तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली ने मंत्र दीक्षा में पधारे हुए सभी बच्चों, अभिभावकों एवं संपूर्ण श्रावक समाज का स्वागत किया।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि मंत्र दीक्षा का महत्त्वपूर्ण आयोजन अभातेयुप के तत्त्वावधान में यहाँ राजाराजेश्वरी नगर तेयुप के आयोजकत्व में हो रहा है। मंत्र दीक्षा का यह कार्यक्रम बच्चों में नमस्कार महामंत्र के प्रति आस्था भाव जगाता है। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने पाँच संकल्पों का उच्चारण करवाकर बच्चों को मंत्र दीक्षा प्रदान की।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने बच्चों को मंत्र शक्ति की महिमा समझायी। साध्वी चेलनाश्री जी ने बच्चों को त्रिपदी वंदना, साध्वी निर्भयप्रभा जी ने नमस्कार महामंत्र की जप विधि तथा साध्वी उदितप्रभा जी ने छोटे-छोटे कथानक द्वारा नमस्कार की महिमा बताई।

इस अवसर पर सभा मंत्री विक्रम महेर, महिला मंडल अध्यक्षा लता बाफना, तेयुप पदाधिकारीगण एवं कार्यसमितिगण सहित ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाएँ एवं अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन प्रकाश छाजेड़ ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप सहमंत्री सरल पटावरी ने किया।

संस्कार निर्माण के में जरूरी है मंत्र दीक्षा

मैसूर।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में बालिकाओं के संस्कार निर्माण हेतु क्षेत्रीय मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मैसूर, नंजनगुड, हुंसूर श्रीरंगपटना, मांड्या एवं आदि अनेक क्षेत्रों से ज्ञानार्थियों ने भाग लिया एवं मंत्र दीक्षा ग्रहण की। कार्यक्रम के प्रारंभ में बच्चों द्वारा ज्ञानशाला गीत गाया गया। साध्वी सिद्धियशा जी ने विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथिगण तेरापंथ सभाध्यक्ष शांतिलाल कटारिया, तेयुप मैसूर के नव निर्वाचित अध्यक्ष विक्रम पितलिया, ज्ञानशाला प्रभारी नेमीचंद बडोला ने विचाराभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम के दौरान साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि ज्ञानशाला आचार्य तुलसी की अद्भुत एवं दीर्घदर्शी चिंतन का फलित है। संस्कार निर्माण का एक महनीय उपक्रम है–मंत्र दीक्षा। कार्यक्रम में मैसूर ज्ञानशाला ने आचार्य भिक्षु जीवन झांकी, नन्जनगुड ज्ञानशाला ने ऐतिहासिक बाल किरदारों के माध्यम से प्रस्तुति दी। हुंसूर, मण्ड्या की ज्ञानशालाएँ, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकागण एवं साध्वीवृंद ने सुमधुर गीतिकाएँ प्रस्तुत की। अनिता कटारिया, ज्ञानशाला संयोजिका ने आभार व्यक्त किया एवं रीना देरासरिया ने कार्यक्रम का संचालन किया। १२० बालक-बालिकाओं ने मंत्र दीक्षा स्वीकार की। विशेष ज्ञानशाला संयोजक नवीन देरासरिया का सहयोग रहा।

आचार्य तुलसी के अवदानों में से एक है मंत्र दीक्षा

पचपदरा।

तेयुप द्वारा तेरापंथ भवन में साध्वी प्रमोदश्री जी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम आयोजित हुआ। तेयुप संरक्षक महेश खतंग ने बताया कि इस कार्यक्रम में ७० ज्ञानशाला बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। साध्वी विजयप्रभा जी ने बालकों को महामंत्र नवकार का शुद्ध उच्चारण, अर्हम वंदना और मंत्र दीक्षा के संकल्प करवाए। साध्वी प्रमोदश्री जी ने कहा कि मंत्र दीक्षा गुरुदेव तुलसी के अवदानों में से एक है, इसका मुख्य उद्देश्य बालकों को बचपन में ही धार्मिक संस्कार से पल्लवित करना है।

कार्यक्रम में ज्ञानशाला के बच्चों ने लघु नाटिका प्रस्तुत की। ज्ञानशाला प्रभारी आनंद डी० चौपड़ा ने ज्ञानशाला की प्रगति का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष ओमप्रकाश ढेलड़िया ने अपने भाव व्यक्त किए। तेयुप के अध्यक्ष दिनेश खतंग ने कार्यक्रम के प्रायोजक अरविंद कुमार, आकाश कुमार, मोहित कुमार मदाणी का साहित्य द्वारा सम्मान किया और कार्यक्रम में सहयोग के लिए परिषद के साथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन विजयदेवी चौपड़ा और महेश बी० खतंग ने किया।

आचार्य तुलसी का अवदान है - ज्ञानशाला

विजयनगर।

अभातेयुप निर्देशित मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन अभातेयुप के तत्त्वावधान में साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अमित नाहटा की अध्यक्षता में सभा भवन में आयोजित किया गया।

सर्वप्रथम ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा मंगलाचरण किया गया। विजय गीत का संगान परिषद के साथियों द्वारा किया गया। तत्पश्चात श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन उपाध्यक्ष अमित नाहटा ने किया।

इस अवसर पर स्वागत वक्तव्य परिषद के नव निर्वाचित अध्यक्ष अमित दक ने उपस्थित सभी महानुभावों एवं बच्चों का स्वागत करते हुए तेयुप द्वारा कृत कार्यों की जानकारी दी। मुख्य अतिथि अमित नाहटा ने अपने वक्तव्य में कहा कि संस्कारों के बीजारोपण की यही सही उम्र है। आचार्य तुलसी के अवदान ज्ञानशाला से बच्चे अपने धर्म, संस्कृति को पहचान पाते हैं एवं उनके संस्कारों का विकास यहीं से होता है।

अभातेयुप राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना एवं निवर्तमान तेयुप अध्यक्ष पवन मांडोत ने प्रेरक प्रसंग के द्वारा बच्चों को क्रोध पर नियंत्रण करने का संकल्प करवाया। सभा अध्यक्ष राजेश चावत ने लघु कथा के माध्यम से बच्चों को मंत्र दीक्षा का महत्त्व बताया।

ज्ञानशाला संयोजिका अभिलाषा डांगी, मधु कटारिया, महिला मंडल अध्यक्ष प्रेम भंसाली ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वीश्री जी ने मंत्र दीक्षा की महत्ता बताते हुए उपस्थित ७० बच्चों को मंत्र दीक्षा प्रदान की। इस अवसर पर तेयुप से मनोज बरड़िया, प्रवीण गन्ना, विकास बांठिया एवं ज्ञानशाला प्रशिक्षिका टीम उपस्थित रही। संचालन अभिलाषा डांगी ने एवं आभार चावत ने किया।

संस्कार निर्माण शिविर

केसिंगा।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा तेरापंथ भवन में मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा तथा संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। सभाध्यक्ष मंगतराम ने सभी का स्वागत किया। अभातेयुप क्षेत्रीय सहयोगी तथा ज्ञानशाला आंचलिक संयोजक बीरेंद्र जैन ने कहा कि जीवन निर्माण और विकास के अनेक माध्यमों में एक छोटा किंतु सशक्त माध्यम है–मंत्र। किसी भी मंत्र में शब्द जितना महत्त्व है, उससे अधिक महत्त्व ध्वनि का है। मंत्र दीक्षा का उद्देश्य है बच्चों को महामंत्र से परिचित कराना और उसके प्रयोग से होने वाले लाभ का अनुभव कराना। संस्कारों का जागरण महत्त्वपूर्ण है।

मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि संस्कारों के जागरण के लिए ४ बातों का ध्यान देना चाहिए। पूर्व भवों का संस्कार, माता-पिता के संस्कार, धार्मिक गुरु के संस्कार तथा मित्रों के संस्कार। मुनि परमानंद जी ने मंच संचालन किया। पूरे पश्चिम ओडिसा से करीब १२० बच्चों ने मंत्र दीक्षा ग्रहण की। ओड़िशा प्रांतीय तेरापंथी सभा के निवेदन से तथा स्थानीय तेरापंथी सभा के आयोजन में एक दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर भी हुआ। केसिंगा, टिटिलागढ़, सिंधिकेला, बेलपड़ा, तुसरा, कांटाबांजी, कुरसूद, भवानीपटना, चंदूतरा, बालंगीर, राजखरियार, नवरंगपुर से करीब १२० बच्चों ने इस शिविर में भाग लिया। उम्र के हिसाब से कंठस्थ की अलग-अलग क्लास लगाया गई। बच्चों ने बड़ी उत्सुकता से सभी सत्रों में भाग लिया। प्रतिभागियों को स्थानीय सभा द्वारा पुरस्कृत किया गया। सभी प्रशिक्षिकाओं को साहित्य से सम्मानित किया गया। ओडिशा सभा के मंत्री अनूप कुमार जैन ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

बच्चों में संस्कार जगाती है मंत्र दीक्षा

नोहर।

मंत्र दीक्षा कार्यक्रम में नमस्कार महामंत्र की महिमा विषय पर बोलते हुए शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने कहा कि मंत्र शास्त्र बहुत विशाल है। हर मंत्र का अपना अलग-अलग विधान होता है। विधिपूर्वक तन्मय होकर मंत्र का स्मरण किया जाता है तो वह निःसंदेह फल देता है। हर धर्म के अपने मंत्र होते हैं, जो अनुभवी ज्ञानी आचार्यों द्वारा निर्मित होते हैं। जैन ग्रंथों में भी अनेक मंत्रों का उल्लेख मिलता है, उन सभी मंत्रों में नमस्कार महामंत्र एक विशिष्ट व प्रभावशाली मंत्र है। इस महामंत्र का स्मरण जैन समाज के अलावा भी अनेकानेक लोग करते हैं। महामंत्र का कवच पहनने के बाद व्यक्ति अपने जीवन में सदा सुरक्षा का अनुभव करता है। शासनश्री ने मंत्र दीक्षा देकर बच्चों को संस्कारी बनाए रहने के लिए कुछ संकल्प भी कराए।

कार्यक्रम का प्रारंभ परमेष्ठी वंदना व त्रिपदी वंदना से हुआ। बच्चों की ज्ञानशाला का उपक्रम प्रारंभ किया। मुनिश्री ने बच्चों को इसमें निरंतर भाग लेने की प्रेरणा दी। महिला प्रशिक्षिकाएँ अपनी सेवाएँ देने के लिए तैयार हो गईं। जैन विद्या प्रशिक्षण पर भी मुनिश्री ने विशेष बल दिया।

स्थानीय तेयुप के अध्यक्ष नितेश जैन व मंत्री चंद्रेश सिपानी ने बच्चों को मंत्र दीक्षा की किट वितरित कीं। महिला मंडल की अध्यक्षा किरण देवी ने अच्छी प्रस्तुति के लिए बच्चों को पुरस्कृत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एसीटीईओ रमेश सिहाग ने की। मुख्य अतिथि पूर्व नगरपालिका चेयरमैन राम व्यास थे। पंजाब नेशनल बैंक के सहायक कर्मचारी नीरज सिंगला भी इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित थे। स्थानीय सभा द्वारा सभी को साहित्य के द्वारा सम्मानित किया गया।

आषाढ़ शुक्ला १३ को भिक्षु बोधि दिवस व जन्म दिवस मनाया गया। मुनिश्री ने भिक्षु स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला। अनेक भाई-बहनों ने गीत व भाषण के द्वारा अपने भावों की प्रस्तुति दी। मुनिश्री ने शक्तिजागरण अनुष्ठान का प्रारंभ करके आज के दिन की महत्ता को और अधिक बढ़ा दिया। इस अनुष्ठान में १३५ व्यक्तियों ने अपना नामांकन मुनिश्री के पास करवाया। इसके अलावा भादरा, आदमपुर, आर्यनगर, डाबड़ी, बालसमंद के भाई-बहन भी इस मंगलकारी उपक्रम से जुड़े हैं। महामंत्र के बीजाक्षरों पर आधारित ओम०अ०सि०आ०उ०सा० नमः मंत्र १०८ दिन तक ११ माला फेरने का इसमें विधान रखा गया है। इसी के साथ कुछ त्याग-प्रत्याख्यान का पालन संभागी जनों के लिए तय किया हुआ है।

मंत्र दीक्षा कार्यक्रम

विशाखापट्टनम्।

तेरापंथ सभा भवन में साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में तेयुप के तत्त्वावधान में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम हुआ। तेयुप सदस्यों द्वारा विजय गीत के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। तेयुप मंत्री चंद्रकांत पारख ने अपने विचार व्यक्त किए। ज्ञानशाला के छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं ने लघु नाटिका का मंचन किया।

साध्वी कल्पयशा जी ने कहा–पहला सुख निरोगी काया। हर व्यक्ति स्वस्थ रहना चाहता है। साध्वी कल्पयशा जी ने आज के युग की आम बीमारियों के लिए मंत्रों के प्रयोग भी बताए और कहा निरंतर मंत्रों का प्रयोग करने से व्यक्ति पूर्णतया स्वस्थ रह सकता है।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा–जीवन है वहाँ प्रतिकूल परिस्थितियों का आना संभव है, लेकिन जो साधक धर्म के मर्म को समझ लेता है वह अपने जीवन को समरसता से परिपूर्ण बना लेता है। वह हर क्षण हर पल आनंद का अनुभव कर सकता है।

साध्वीश्री जी ने बालक-बालिकाओं को मंत्र दीक्षा प्रदान की। तेयुप द्वारा मंत्र दीक्षा की सामग्री प्रदान की गई। कार्यक्रम के प्रायोजक चैनरूप सुराणा और ललित पारख तथा धर्मेन्द्र लालवानी का सभा के द्वारा सम्मान किया गया। चैनरूप सुराणा की ओर से बालक-बालिकाओं के उत्साहवर्धन के लिए पुरस्कार प्रदान किए गए। मंत्र दीक्षा के कार्यक्रम का संचालन साध्वी कल्पयशा जी द्वारा किया गया।

✦ *इंद्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

कोलकाता स्तरीय 'शिलालेख - एक पैगाम' कार्यशाला का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में तेयुप पूर्वांचल द्वारा 'शिलालेख - एक पैगाम' कार्यशाला का आयोजन हुआ। साध्वी स्वर्णरेखा जी द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। पूर्वांचल स्वर लहरी के गायकों ने विजय गीत एवं स्वागत गीतिका का संगान किया। परिषद अध्यक्ष विकास सिंघी ने उपस्थित राष्ट्रीय नेतृत्व एवं सभी परिषदों के पदाधिकारियों का स्वागत किया।

अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने कार्यशाला के उद्घाटन की घोषणा की। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि पदाधिकारियों को १ वर्ष के लिए जो दायित्व मिला है और उस दायित्व काल में उन्होंने जो लक्ष्य निर्धारित किया है, उसे संकल्प के साथ पूर्ण करना है। राष्ट्रीय महामंत्री मनीष दफ्तरी ने समस्त परिषदों के नवमनोनीत पदाधिकारियों को शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए संघ एवं संघपति के प्रति समर्पित रहते हुए कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

साध्वी स्वर्णरेखा जी ने कार्यशाला में उपस्थित सभी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं को देव, गुरु और धर्म के प्रति निष्ठावान रहने के लिए प्रेरणा पाथेय दिया। उन्होंने कहा कि पदाधिकारी जब कार्यकर्ता बनकर कार्य करते हैं तब वह सबके चहेते बन जाते हैं और निरंतर कार्य करने से शिलालेख का निर्माण हो जाता है। राष्ट्रीय अध्यक्ष की प्रेरणा पाकर कोलकाता के समस्त परिषदों से उपस्थित पदाधिकारियों ने आगामी सत्र के लिए अपने लक्ष्य एवं दायित्व की प्रस्तुति अभातेयुप पदाधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत की। उपाध्यक्ष अमित नाहटा, महेश बाफना, सहमंत्री अनंत वागरेचा ने अपने वक्तव्य में सभी शाखा परिषदों को पूर्ण चेतना और उत्साह के साथ कार्य करने की प्रेरणा दी।

कार्यशाला में आभार ज्ञापन सहमंत्री राजीव खटेड़ ने किया। संचालन नरेंद्र छाजेड़ ने किया। कोलकाता स्तरीय कार्यशाला में तेयुप उत्तर हावड़ा, दक्षिण हावड़ा, दक्षिण कोलकाता, बेहाला, मध्य उत्तर कोलकाता, कोलकाता मेन, लिलुआ, हिंदमोटर, टॉलीगंज आदि परिषदों के पदाधिकारियों ने सहभागिता दर्ज करवा राष्ट्रीय नेतृत्व के समक्ष एकता का परिचय दिया। कार्यक्रम में पूर्वांचल सभा के अध्यक्ष संजय सिंघी, मंत्री प्रवीण पगारिया, महिला मंडल की अध्यक्षता श्वेता डाकलिया, मंत्री बिंदु बोथरा सहित परिषद एवं किशोर मंडल के सदस्यों की उपस्थिति रही।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर कलेक्शन सेंटर का उद्घाटन

पूर्वांचल-कोलकाता।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर कलेक्शन सेंटर का अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी की अध्यक्षता में जैन संस्कार विधि से उद्घाटन हुआ। जैन संस्कारक सुरेंद्र सेठिया एवं प्रवीण सिंघी ने विधिवत मंगल मंत्रोच्चार से उद्घाटन करवाया। परिषद अध्यक्ष विकास सिंघी ने राष्ट्रीय नेतृत्व एवं उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया।

कार्यक्रम में अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने पूर्वांचल परिषद के कार्यों की प्रशंसा करते हुए निरंतर आरोहण की प्रेरणा दी। महामंत्री मनीष दफ्तरी ने परिषद परिवार को बधाई देते हुए कलेक्शन सेंटर शृंखला खोलने की प्रेरणा दी। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में जैन श्वेतांबर तेरापंथ महासभा के अध्यक्ष सुरेश गोयल उपस्थित रहे। इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद से उपाध्यक्ष अमित नाहटा, उपाध्यक्ष महेश बाफना, महामंत्री मनीष दफ्तरी, शाखा प्रभारी सुनील दुगड़ एवं अभातेयुप से नरेंद्र छाजेड़, सूर्यप्रकाश डागा, मनीष सेठिया, यश रामपुरिया, अमित पुगलिया, लिलुआ परिषद के अध्यक्ष विकास पुगलिया, उत्तर हावड़ा परिषद अध्यक्ष प्रवीण सिंघी उपस्थित रहे। निवर्तमान अध्यक्ष आलोक बरमेचा, उपाध्यक्ष अमित बैद, धर्मेंद्र बुच्चा, सहमंत्री यश दुगड़, राजीव खटेड़, कोषाध्यक्ष प्रदीप सिंघी एटीडीसी सह-प्रभारी रोहित धाड़ेवा, हेमंत बैद संस्थापक अध्यक्ष रतनलाल श्यामसुखा सहित अनेक गणमान्य जनों की भी उपस्थिति रही।

सम्मान के पीछे भागे नहीं, सम्मान मिले...

(पृष्ठ १६ का शेष)

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

टीपीएफ राष्ट्रीय मंत्री हिम्मत जैन ने टीपीएफ की गतिविधियों के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन राजेंद्र सेठिया ने किया।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि संघीय विकास का आधारभूत तत्त्व साधार्मिक-वात्सल्य है। जैन धर्म का दक्षिण में विकास साधार्मिक वात्सल्य के आधार पर ही हुआ था। अभयदान-प्रभावना का महत्त्व समझाया।

साध्वी कौशलप्रभा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि हमारा लक्ष्य सिद्धि प्राप्ति का है। रफ्तार से ज्यादा दिशा महत्त्वपूर्ण है।

दीक्षा ग्रहण में पूर्व जन्म के संस्कारों...

(पृष्ठ १६ का शेष)

छठा प्रकार–स्मारणिका-जन्मांतरों की स्मृति होने पर ली जाने वाली दीक्षा। यह भगवान मल्लीनाथ व उनके पूर्व भव के छह मित्रों के प्रसंग से समझाया। सातवाँ प्रकार है–रोगिणिका, रोग का निमित्त मिलने पर ली जाने वाली प्रव्रज्या। यह चक्रवर्ती सनतकुमार के प्रसंग से समझाया।

आठवाँ प्रकार है–अनादृता-अनादर होने पर ली जाने वाली प्रव्रज्या। नौवाँ प्रकार है–देव संज्ञप्ति-देव के द्वारा प्रतिबुद्ध होने पर ली जाने वाली प्रव्रज्या दसवाँ कारण है–वत्सानुबंधिका, अपने बेटे को दीक्षा देते हुए दीक्षा की भावना पैदा हो सकती है। ऐसे अनेक उदाहरण हमारे धर्मसंघ में हैं।

यह दस प्रकार ठाणं में प्रव्रज्या के बताए गए हैं। दीक्षा में निमित्तों का चित्रण इस सूत्र में किया गया है।

शासनश्री साध्वी मूलांजी की स्मृति सभा

आज हम हमारे धर्मसंघ की एक साध्वीजी की स्मृति सभा कर रहे हैं। साध्वी मूलांजी जो लूणकरणसर में थी। पूज्यप्रवर ने उनका परिचय दिया। इन्होंने आगम बत्तीसी का पारायण किया था। कच्छ प्रांत से उनकी पहली दीक्षा हुई थी। पूज्यप्रवर ने मध्यस्थ भाव से चार लोगस्स का ध्यान करवाया।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि सौभाग्यशाली होते हैं, जो जैन शासन में, तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित होकर साधना करते हैं।

मुख्य मुनिप्रवर ने कहा कि व्यक्ति को मनुष्य जन्म मिलता है, जिसे शास्त्रों में दुर्लभ कहा गया है। साध्वी मूलांजी ने मनुष्य जन्म को सार्थक करते हुए अल्प अवस्था में ही संयम जीवन स्वीकार किया।

साध्वी गौरवयशाजी, साध्वी नवीनप्रभा जी, साध्वी केवलयशा जी, मुनि अनंत कुमार जी ने भी साध्वी मूलांजी के प्रति अपने उद्गार व्यक्त किए।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। विमल डागा व अंकिता डागा ने अठाई के प्रत्याख्यान लिए। सुरेश बोरदिया-डीसा के २१ की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए।

मुख्य नियोजिका जी ने सम्यक् दर्शन की महत्ता को समझाते हुए कहा कि हमें जो सम्यक्त्व दर्शन रूपी रत्न प्राप्त हुआ है, वो मोक्ष पर्यन्त कल्याण को ही देने वाला है। सम्यक् दर्शन को हमारे जीवन की आधारशिला बताया गया है।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि मनुष्य अमृत का पान करता है, क्या? वह व्यक्ति अमृत का पान कर सकता है, जिसका दृष्टिकोण पक्षपात रहित होता है। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ तर्क के द्वारा ज्ञान को वृद्धिंगत किया जा सकता है, इसलिए विद्वत्ता को बढ़ाने के लिए तर्कशक्ति का विकास आवश्यक है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

अनेकांत इन एडमिनिस्ट्रेशन कॉन्फ्रेंस का आयोजन

सम्मान के पीछे भागे नहीं, सम्मान मिले ऐसी अर्हत का अर्जन करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २८ अगस्त, २०२१

अध्यात्म चेतना के युग पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि श्रमण धर्म के दस प्रकार बताए गए हैं। धर्म के दो प्रकार हैं। चारित्र धर्म का नाम श्रमण धर्म भी है।

इन दस प्रकारों के साथ श्रमण शब्द जोड़ा गया है, तो हम यह कल्पना करते हैं कि साधु को तो इनकी विशेष आराधना करनी चाहिए। साधु के पाँच महाव्रत होते हैं। महाव्रत की निर्मलता इन धर्मों के आराधने से रह सकती है।

पहला प्रकार है–शांति यानी गुस्से का निग्रह करना, सहिष्णुता रखना। बहुत बड़ा धर्म है। प्रतिकूल स्थिति है, फिर भी गुस्सा नहीं आए। मुनि कौन? सब कुछ सहन करने वाला जैसे पृथ्वी। मुनि का ये आदर्श रहे। मंजिल सामने है तो आगे बढ़ सकते हैं। मंजिल तय ही नहीं है, तो आदमी किधर गति तय करेगा। कहाँ पहुँचेगा। आदर्श को तय कर लेना अपने आपमें अच्छी बात है।

आदर्श दो प्रकार के होते हैं–एक व्यक्तिपरक आदर्श, दूसरा सिद्धांतपरक आदर्श। किसी व्यक्ति को अपना आदर्श बना लेना यह व्यक्तिपरक आदर्श है। जैसे भगवान महावीर मेरे आदर्श हैं। उनके गुण मुझमें आएँ, मैं उन जैसा बन जाऊँ। यहाँ पर भी दो बातें हैं–एक भौतिकतापरक आदर्श, एक आध्यात्मिकतापरक आदर्श। जैसे मैं तिपृष्ट वासुदेव जैसा बनूँ यह भौतिकतापरक आदर्श है।

सिद्धांतपरक आदर्श है, जैसे क्षमाशीलता। उत्तम कोटि की क्षमा मेरा आदर्श हो। सिद्धांत, तथ्य, धर्म कह दें या व्यक्तिपरक वहीं सिद्धांतपरक होते हैं। सब कुछ सहन कर लेना मुनि का आदर्श है। ऋषि होते हैं, वे महान प्रसाद वाले, प्रसन्नता वाले होते हैं। मुनि कभी कोप में तत्पर नहीं होते। यह आलंबन लिया जा सकता है।

दूसरा धर्म है–मुक्ति-निर्लोभता। पदार्थों का लोभ-आकर्षण नहीं। रागात्मक आकर्षण पदार्थों का न हो। तीसरा धर्म है–आर्जव। माया का निग्रह करना, सरलता रखना। करनी-कथनी में असमानता न हो। पारदर्शिता रखो। चौथा है–मार्दव। मान-अहंकार का निग्रह। जहाँ सब नेता बन जाते हैं, सारे लोग अपने आपको पंडित मानने लग जाएँ, सारे महत्त्व चाहते हैं, वो राष्ट्र दुःखी होगा।

देवलोक में दो प्रकार की व्यवस्थाएँ हैं। कल्पोपन्न और कल्पातीत। कल्पोपन्न यानी जहाँ इंद्र आदि की व्यवस्था होती है। कल्पातीत में सारे अहमिन्द्र हैं। जिसकी जितनी योग्यता है, उस हिसाब से रहे तो व्यवस्था अच्छी रह सकती है। चार धर्म आ गए हैं, छह धर्म और हैं।

माणक महिमा की व्याख्या करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि माणक गणी सिधार गए हैं। अवांछनीय स्थिति बन गई है। सारे संतों ने चिंतन किया–आगे क्या कैसे करें। उस समय १४ संत और १७ सतियाँ गुरुकुलवास में हैं। कैसे धर्मसंघ को आचार्य पर्याप्त हो, ऐसा चिंतन चल रहा है।

संघ जैसे बिना ग्वाला के गायों जैसे हो गया हो, बिना सेनापति की सेना, बिना चाँद की चाँदनी। बिना माली का बगीचा, बिना रखवालदार के खेती की तरह हो गया है। शासन की शान कैसे बचानी, इस तरह विचार-विमर्श हो रहा है। जो होना था सो हो गया, अब आगे क्या, कैसे करना है। हम सब मिलकर बड़प्पन दिखाएँ। (शेष पृष्ठ १५ पर)

अज्ञान रूपी तिमिर से ज्ञान रूपी प्रकार की राह दिखाने वाले परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्त्वावधान में भीलवाड़ा शाखा द्वारा 'अनेकांत इन एडमिनिस्ट्रेशन' कॉन्फ्रेंस का आयोजन हुआ। इस कॉन्फ्रेंस में देशभर से आईएएस, आईआरएस, आईपीएस सहित विभिन्न सिविल सर्विस अधिकारी सम्मिलित हुए।

इस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए आचार्यप्रवर ने फरमाया कि प्रशासनिक सेवा में व्यक्ति योग्यता और विशिष्ट श्रम के बल पर ही पहुँच सकता है। योग्यता न होने पर भी पद की लिप्सा करना अवांछनीय है। अगर व्यक्ति में योग्यता, ज्ञान या शक्ति नहीं है फिर भी उसे सम्मान व महत्त्व चाहिए तो व्यवस्था गड़बड़ा सकती है। सम्मान के पीछे भागें नहीं बल्कि सम्मान मिले ऐसी योग्यता, अर्हता का अर्जन करने का प्रयास करना चाहिए। योग्यता के आधार पर पद दिया जाए तो समाज एवं राष्ट्र विकास के पथ पर अग्रसर हो सकता है। प्रशासनिक पद पर आसीन व्यक्ति के मन में आग्रह और दुराग्रह की भावना न हो, यह आवश्यक है। कार्य टीम और स्कीम के साथ होना चाहिए। टीम के हर व्यक्ति के विचारों का सम्मान एवं जहाँ दूसरों के विचार युक्ति संगत हों वहाँ स्वयं के विचार का त्याग कर देना ही अनेकांत का प्रयोग है। अनेकांत से टीम में विश्वास नहीं अपितु मजबूती आएगी। सभी में समर्पण की भावना का विकास होगा, जिससे सभी का सामूहिक विकास होगा और निर्णय भी परिपूर्णतापूर्वक हो सकेगा। अधिकारियों में अर्थ की प्राप्ति मुख्य उद्देश्य न रहकर सेवा भावना की प्रमुखता रहे तो प्रशासनिक व्यवस्था सुचारु रूप से संचालित हो सकती है। अनेकांत जैसा अध्यात्म का व्यापक विषय व्यवहार में भी अनेक प्रकार की समस्याओं से बचा जा सकता है।

दीक्षा ग्रहण में पूर्व जन्म के संस्कारों की विशिष्ट भूमिका : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २७ अगस्त, २०२१

करुणा के सागर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देषणा प्रदान करते हुए फरमाया कि ठाणं आगम के दसवें अध्याय के पंद्रहवें सूत्र में प्रव्रज्या के दस प्रकार उल्लेखित हैं। चौथा प्रकार है प्रव्रज्या का स्वप्ना। प्रव्रज्या आदमी ग्रहण करता है, उसकी पृष्ठभूमि में अनेक कारण रह सकते हैं।

प्रव्रज्या एक ऐसा कार्य है, वह यकायक हो जाए, ऐसा प्रायः कठिन लगता है। कुछ उसकी पृष्ठभूमि में होता है, तब व्यक्ति प्रव्रज्या को ग्रहण करता है। प्रव्रज्या आदमी लेता है, तो उसके पिछले कई जन्मों के संस्कार अपनी भूमिका अदा कर सकते हैं। कई बार कोई ऐसा सपना आता है, आदमी के मन में दीक्षा की भावना पैदा हो जाती है। यह एक प्रसंग से समझाया।

मित्र बनाते भी हो तो फिर आध्यात्मिक लाभ आबंटित करने का प्रयास करो। देव मित्र भी हो सकते हैं, जो स्वप्न में आकर अपने मित्र को अध्यात्म के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दे सकते हैं। नरक गति के चार कारण और देवगति के चार-चार कारण शास्त्रों में बताए गए हैं। देव गति में जाना है, तो सराग संयम ही काम आएगा। वीतराग संयम से मोक्ष की प्राप्ति होती है। आयुष्य का बंध तो छठे गुणस्थान तक शुरू हो सकता है। उसके बाद नहीं। सातवें में आयुष्य बंध पूर्ण हो सकता है।

देवगति के सुखों के लिए संयम न लें, संयम लें मोक्ष के लिए। पाँचवाँ प्रकार है–प्रतिश्रुता पहले की हुई प्रतिज्ञा के कारण ली जाने वाली। यह धन्नाव शालीभद्र के प्रसंग से समझाया। दीक्षा लेना है, तो एक साथ छोड़ो। धन्ना ने प्रतिज्ञा ली और शालीभद्र के साथ दीक्षा ली।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

शासनश्री साध्वी मूलांजी का देवलोकगमन

लूणकरणसर।

शासनश्री साध्वी मूलांजी का जन्म गुजरात के उत्तर-पश्चिम सीमांत कच्छ जिले के फतेहगढ़ गाँव में वि०सं० १९८७ वैशाख शुक्ला द्वादशी को हुआ। धर्मनिष्ठ श्रावक निहालचंद भाई संघवी एवं माता हेमादेवी की ६ संतानों में आप सबसे छोटी थीं। साध्वी भतूंजी, मुनि रावतमल जी एवं साध्वी छगनाजी के लगातार तीन चातुर्मास फतेहगढ़ में होने के कारण आपमें वैराग्य का बीज अंकुरित हुआ। वि०सं० २००४ में बीदासर में गुरुदेव तुलसी के दर्शन कर दीक्षा की प्रार्थना की परंतु उस समय दीक्षा की स्वीकृति नहीं मिलने के कारण छापर चातुर्मास में उन्हें दीक्षा की अर्ज की। श्रावक शुभकरण दस्सानी के आश्वासन एवं वैराग्य की दृढ़तम भावना देखकर गुरुदेव ने दीक्षा का आदेश प्रदान किया। आदेश के पश्चात अनेक अवरोधों को पार कर आचार्य तुलसी के करकमलों द्वारा आपको छापर में दीक्षा प्रदान की गई। गुजरात प्रदेश की दीक्षित प्रथम साध्वी का नाम आचार्य तुलसी ने मूलांजी रखा। दीक्षा के पश्चात ७३ वर्ष तक एक ही सिंघाड़े में आपको साध्वी छगनांजी एवं शासनश्री साध्वी पानकंवर जी 'द्वितीय' के सान्निध्य में रहने का अवसर प्राप्त हुआ।

साध्वी मूलांजी एवं साध्वी पानकंवरजी दोनों निरंतर सह-स्वाध्याय करते रहे। परस्पर साथ रहने की भावना के कारण अग्रगण्य बनकर विचरने की बात को भी अनासक्त भाव से आपने मना कर दिया। आपके संसारपक्षीय संघवी परिवार से सात चारित्रात्माएँ मुनि अनंतकुमार जी, साध्वी मंगलयशा जी, साध्वी मुक्तिश्री जी, साध्वी मल्लिकाजी, साध्वी गौरवयशा जी, साध्वी नवीनप्रभा जी, साध्वी रुचिप्रभा जी धर्मसंघ में साधनारत हैं। जीवन के अंतिम पड़ाव में शारीरिक अस्वस्थता के पश्चात २३ अगस्त, २०२१ को प्रातः ११:११ पर लूणकरणसर में आपका देवलोकगमन हुआ एवं २४ अगस्त को लूणकरणसर में ही श्रावक समाज की उपस्थिति में अंतिम संस्कार हुआ।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**